CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवप्रतापविरुदावली

(शतक-द्वयोपेता)

[भारतप्रशासनस्य शिक्षासमाजकल्याणमन्त्रालयार्पितार्थ-साहाय्येन प्रकाशिता]

हजारीलालः शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवप्रतापविरुदावली

(प्रतापविजयनाम प्रथमशतकम्)

प्रणेता—

काव्यकलारत्नवासु पुरस्कारविजेता

भारतराज्यप्रतिष्ठित पं० श्रीहजारीलालः शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक:—
हजारीलाल शास्त्री
मु० पो० घिलावड़ (छोटी)
जिला सोनीपत (हरयाणा)

मूल्यम्
श्रावणी २०३० वि०
प्रथम संस्करणम् १०००
सर्वेऽधिकाराः खलु लेखकस्य

मुद्रकः—
वेदव्रत शास्त्री विद्याभास्कर
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
दयानन्दमठ रोहतक।
दूरभाष ५७४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वित्राः शब्दाः

वीरप्रतापविजयस्य मया स्वबुद्ध्या
चित्रं सुचित्रितमिदं प्रियबन्धुवर्याः।
यद्यत्र मे स्खलितिरार्यंजनाभिलक्ष्या
स्यात् सर्वमार्यपुरुषैः परिशोधनीयम् ॥१॥
इत्थं शिवस्य च सुचारुचरित्रचित्रं
संचित्रितं विविधचित्रविचित्रभावैः।
स्याद् येन हिन्दुजनता निजपूर्वजानां
श्रुत्वा कथां बलवतीति मतिर्ममार्याः ॥२॥
अस्मिन् प्रतापशिवपुस्तक - शोधकार्ये
दत्तो महान् स्व-समयः प्रियपण्डितेन।
वेदव्रतेन विदुषा मरुभूभवेन
सौजन्यमार्यविदुषो न हि विस्मरामि ॥३॥

हिन्दी :— **दो शब्द**

प्रिय बन्धुओ ! मैंने अपनी बुद्धि से वीर राणाप्रताप की विजय का अद्भुत चित्र खींचा है। इसमें मेरी कोई त्रुटि आपकी दृष्टिगोचर हो जाए तो आर्यबन्धुओं ने उसका परिशोधन कर लेना चाहिये ॥१॥

इसी प्रकार वीर शिवाजी महाराज का भी चित्र-विचित्र भावों से (जीवन चरित्र) का चित्रण किया है। जिससे आर्यजनता में अपने पूर्वजों की कथा सुनकर (हृदय में) जागृति पैदा होगी यह मेरी बुद्धि का विचार है ॥२॥

इस पुस्तक के संशोधन में मेरे परम सुहृद् आर्यबन्धु अजीतपुरा, त० चिड़ावा में उत्पन्न एवं सम्प्रति रोहतक निवासी प्रिय पण्डित वेदव्रत जी शास्त्री व्याकरणाचार्य ने अपना (अमूल्य) समय प्रदान किया है। अतः मैं इनके सौजन्य से आभारी हूँ ॥३॥

लेखक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ समर्पणम् ❀

येर्धर्मवीरपुरुषैर्निजदेशहेतो-
स्त्यक्तं समस्तनिजजीवनमार्यवीरैः ।
तेषामहं सविनयं स्मृतिपुण्यतीर्थे
हृद्यं सुपद्यकुसुमाञ्जलिमर्पयामि ॥

जिन धर्मवीर पुरुषों ने अपने देश के लिए अपना समस्त जीवन निछावर कर दिया उनकी स्मृतिरूपी पुण्यतीर्थ में विनय पूर्वक (मैं) वह सुन्दर पुष्पाञ्जली समर्पित करता हूँ।

समर्पक—

लेखक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवप्रतापविरुदावली

(वीरप्रताप-विजय-नाम-प्रथमशतकम्)

❀ मङ्गलाचरणम् ❀

ध्यायन्ति शुद्धमनसो मनसा विरक्ता
यं योगिनो हृदि निरुध्य समाधिकाले ।
वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय
तस्मै नमो भगवते पुरुषोत्तमाय ॥१॥

यैर्धीरवीरपुरुषैः प्रणरक्षकैर्हि
मग्नारिजालजलधौ निजमातृभूमिः ।
उद्धारिता धृतवराहवरेण्यरूपै-
स्तेषां सुचारुचरितानि सदा स्मरामः ॥२॥

जिसका वैरागी योगी पुरुष (शुद्ध मनवाले) समाधि काल में ध्यान करते हैं। जिसका विचित्र चरित्र वाणी से अगोचर है उस पुरुषोत्तम भगवान् को नमस्कार करता हूँ ॥१॥

जिन दृढ़प्रतिज्ञ धीर-वीर पुरुषों ने वराहरूप धारणकर शत्रुजालरूपी समुद्र में डूबी हुई अपनी मातृभूमि को उभारा उन महापुरुषों के सच्चरित्रों को हम सदा स्मरण करते हैं ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीभक्तसिंह-सुखदेव-पटेलमुख्याः
श्रीचन्द्रशेखर-यतीन्द्र-सुभाषवीराः ।
अन्येऽपि ये निजतनूं व्यजहुः परार्थं
को विस्मरिष्यति कृतज्ञजनः सतस्तान् ॥३॥

श्लाघ्यः सदा सुपुरुषः प्रियगान्धिदेवः
श्रीज्वाहरो नयनिधिश्च पटेलवीरः ।
यच्छीलशान्तिगुणनीतिविशिष्टशक्त्या
स्वाधीन एष खलु भारतवर्षदेशः ॥४॥

धन्यास्तु ते सुमनसो मनसाभिवन्द्याः
स्मृत्याः प्रभातसमये हृदि पुण्यवन्तः ।
स्वाधीनता-परमशुद्ध-विशुद्धयज्ञे
स्वं जीवनं सुमुदितैः सुसमर्पितं यैः ॥५॥

वीर भगतसिंह, सुखदेव, सरदार श्री पटेल, श्री चन्द्रशेखर, यतीन्द्रनाथ, वीर सुभाष तथा और भी जिन हुतात्मा वीरपुरुषों ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए उनके सच्चरित्रों को कौन कृतज्ञ पुरुष स्मरण नहीं करेगा ॥३॥

श्री गान्धी जी, श्री वीर जवाहर, नयनिधि सरदार पटेल, ये सदा श्लाघनीय हैं। जिनकी शान्तिनीति तपशक्ति से भारत देश स्वाधीन हुआ ॥४॥

वे प्रातःस्मरणीय पुण्यवान् मनीषी महापुरुष धन्य हैं जिन्होंने स्वाधीनता के विशुद्ध यज्ञ में सहर्ष अपने जीवन को समर्पित कर दिया ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्यः स भाग्यमलसूनुरतीवधीरो
वीरो हकीकत इहाऽसमये स्वदेशे ।
प्राणान् जहौ भरतभूबलिदानवेद्यां
यन्नाम विस्मृतिपथं न कदापि यायात् ॥६॥

वह भागमल का सुपुत्र वीर हकीकतराय धन्य है जिसने भारत की बलिदान वेदी पर अपने प्राण (धर्म हेतु) बचपन में न्यौछावर कर दिये । जिसका नाम (संसार) कभी नहीं भूलेगा ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काव्यारम्भोपक्रमः

स्वाधीनतार्थमथ देशहिताय वीरै-
स्त्यक्तां तनूं भरतभूबलिदानवेद्याम् ।
स्मृत्वा विभाव्य च हितं निजमातृभूमे-
र्वीर-प्रतापचरितं विवृणोमि पद्यैः ॥१॥

नाहं कविर्मयि न चास्ति कवित्वशक्ति-
र्जानामि नैव कवितानियमान् विशिष्टान् ।
काव्यस्य चास्य रचनार्थविधाविदानीं
सर्वं ममास्ति किल साहसमात्रमेव ॥२॥

काव्यकथारम्भ—

मैं उन हुतात्मा स्वाधीनता व देशहित के लिए बलिदान हुए वीरों की मूर्ति को स्मरण करके और मातृभूमि का हित विचार के (संस्कृत) पद्यों में वीर प्रताप का चरित्र वर्णन करता हूँ ॥१॥

न मैं कवि हूं, न मुझे में कवित्वशक्ति है, न मैं कविता के विशिष्ट नियमों को जानता हूं । इस काव्य की रचना में यह मेरा केवल साहस मात्र है ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूकं जनं प्रकुरुते ननु वाग्मिनं यः
पङ्गुं गिरिं च खलु लंघयतेऽतिगम्यम् ।
तस्याप्यहं सकललोकगुरोः कृपातः
काव्यं त्विदं कलयितुं विहितप्रयत्नः ॥३॥

ज्ञात्वा मदीयकवितारचनाविचारान्
कामं हसन्तु नितरामबुधा मदान्धाः ।
नास्तीति मे मनसि कुत्सितभावनेयं
चित्यं हि पश्यति खलः परदूषणानि ॥४॥

राणाप्रतापसदृशः सुभटो न कोऽपि
वीरो महान् समभवन्न भविष्यतीति ।
योऽसौ विहाय धन-पुत्र-कलत्र-भोगान्
बभ्राम कन्दफलभुग् गिरिकन्दरासु ॥५॥

जो गूंगे को वाचाल बना देता है, लंगड़े को अगम्य पर्वत के शिखर से पार कर देता है, उस सकल लोक गुरु (परमात्मा) की कृपा से इस (लघु) काव्य की रचना करने का प्रयत्न करता हूं ॥३॥

बेशक मेरे कविता रचना के विचारों को जानकर मदान्ध मूर्ख हँसे, मेरे मन में यह कुत्सित भावना नहीं है, क्योंकि खल (मूर्ख) सदा दूसरों के दोष देखा करता है ॥४॥

राणा प्रताप के समान कोई वीर योद्धा न हुआ न होगा। जो धन, पुत्र, स्त्री भोगों को छोड़कर केवल कन्द मूल फल खाता पहाड़ों की गुफाओं में भटकता फिरता रहा ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्यैव वीरपुरुषस्य विचित्रगाथां
दिव्यां सुधामिव सदामरतां दधानाम् ।
तामारभे सुलिखितुं ललितैः सुपद्यै-
र्भावो यया समुदयेद् निजगौरवस्य ॥६॥

वीरः स लोहपुरुषः शतकेऽजनिष्ट
मेवाडमध्यमथ षोडशके शुभेऽह्नि ।
जातानि तत्र सुमहोत्सवमङ्गलानि
चित्तौडराज्य उदयाख्यपुरेऽतिरम्ये ॥७॥

जाते सुते शुभदिने जननी प्रहृष्टा
हृष्टस्तदीयजनकश्च ददौ द्विजेभ्यः ।
वासांस्यनेकमणिरत्नसुभूषणानि
बालो भविष्यति सुधीरिति सूचकानि ॥८॥

मैं उस वीर पुरुष की दिव्य परमाद्भुत गाथा जो अमृतमयी है, सुन्दर (संस्कृत) पद्यों में लिखता हूं। जिससे (लोगों में) अपनी वीरता के गौरव का भाव जागृत होगा ॥६॥

वह वीर लोहपुरुष (राणा प्रताप) मेवाड़ प्रदेश मध्य चित्तौड़ राज्यान्तर्गत उदयपुर नगर में १६वीं शताब्दी में उत्पन्न हुआ ॥७॥

पुत्र के उत्पन्न होनेवाले शुभ दिन प्रसन्नमन माता पिता ने ब्राह्मणों को अनेक वस्त्राभूषण (मणिखचित) दान दिए। जो वस्त्राभूषण इस बात के सूचक थे कि बालक भविष्य में बड़ा बुद्धिमान बनेगा ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातस्य जन्मदिवसे प्रियया जनन्या
संपूजिता द्विजजनाः ददुराशिषश्च ।
जित्वारिजुर्मष्टपि भारतवर्षदेशं
पुत्रस्तवैष भवितेति बली प्रतापी ॥९॥

तेनैव तस्य जननी निजपुत्रनाम
विप्राशिषानुसदृशं विदधे प्रतापम् ।
सर्वत्र तत्र भुवि यस्य महाप्रतापो
मार्तण्डमण्डलसमो विबभौ दिशासु ॥१०॥

यः शैशवे गुरुकुले सकलाकलासु
युद्धस्य चाल्पसमये कुशलो बभूव ।
सम्प्राप्य यौवनदशां विजयाभिमानी
ह्याजीवनं स युयुधेऽरिबलेन सार्धम् ॥११॥

जातक की प्रिय माता ने जन्म दिवस पर ब्राह्मणों की पूजा की और ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिए। तेरा यह पुत्र (यवन) शत्रुओं से आक्रान्त भारत देश को जीतकर बड़ा बली प्रतापी (राजा) होगा ॥९॥

इस कारण उसकी माता ने ब्राह्मणों के आशीर्वाद के सदृश अपने पुत्र का नाम प्रताप रख दिया। जिसका प्रताप पृथ्वी पर सूर्य मण्डल के समान सर्वत्र फैल गया ॥१०॥

जो बचपन में गुरुकुल की समस्त युद्ध सम्बन्धी विद्याओं को अल्प समय में सीख गया और यौवन पाकर वह विजयाभिलाषी हो जीवन पर्यन्त शत्रु दल से लड़ता रहा ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वत्र तत्र खलु भारतवर्षदेशे
लब्ध्वाऽधिपत्यमिह चाकबरो नरेशः।
राणाप्रतापमतिरिच्य महाप्रतापं
सर्वार्यदेशनृपतीन् स्ववशे निनाय ॥१२॥

राणाप्रताप इभराडिव शोभमान-
श्चाधीनतामकबरस्य न साधु मेने।
स्वाधीनमार्यवरदेशमथाकबरस्य
पाशैर्विमोक्तुमनिशं मनसा शुशोच ॥१३॥

वीरं प्रतापमपहाय तदीयवंश्या
जाता नृपाः कति च येऽकबरस्य भक्ताः।
ते लोभपाशविवशा यवनीयसेना-
वैशिष्ट्यशिष्टपदमापुरतोऽतिखेदः ॥१४॥

सर्वत्र भारतवर्ष में अकबर राजा ने महाप्रतापी राणा प्रताप को छोड़कर सब आर्य देश के राजाओं को अपने वश में कर लिया ॥१२॥

राणा प्रताप हाथी के समान शोभायमान हुआ अकबर की अधीनता को ठीक नहीं मानता था। स्वाधीन भारत को अकबर के जालपाश से छुड़ाने के लिए वह दिन रात सोचता था ॥१३॥

राणा प्रताप के वंशधर कुछ लोग राणा प्रताप को छोड़कर अकबर के पिट्ठु बन गए। लोभपाश में बन्धे वे मुसलमानी सेना में जा मिले और उन्हें विशिष्ट पद मिल गया। यह बड़ा खेद है ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये के नृपा हतधियोऽकबरस्य सेनां
संभेजिरे परिविहाय नृपं प्रतापम् ।
नामानि चापयशसा परिदूषितानि
तेषां सदार्यजनताऽपवदिष्यतीति ॥१५॥

भ्राता प्रतापनृपतेर्ननु शक्तिसिंहो
भ्रात्रे द्विषन् हतमती रिपुणाऽकबरेण ।
संधाय वाञ्छितविशिष्टपदानुरागी
राज्ञः प्रियो यवनसैन्यदलाधिपोऽभूत् ॥१६॥

क्षात्रं स्वधर्ममपहाय विचारहीनो
राज्ञाऽकबरेण मिलितो ननु मानसिंहः ।
ईर्षाञ्चकार सुहृदा सह यश्च धूर्तो
धिक् तं च तस्य चरितं च बलं कुलं च ॥१७॥

कुछ हतबुद्धि (क्षत्रिय राजे) अकबर की सेना में (प्रताप को छोड़) जा मिले। उनके नामों पर कलंक लग गया। जिनकी आर्य जनता सदा निन्दा करेगी ॥१५॥

और राणा प्रताप का भाई शक्तिसिंह भाई से द्वेष करता हुआ (हतबुद्धि) शत्रु अकबर से जा मिला। वह कोई विशेष पद चाहता था। उसे यवनसेना का अधिपति (सरदार) बना दिया गया ॥१६॥

इधर मानसिंह अपने क्षात्र धर्म को छोड़ (विचार शून्य) राजा अकबर से जा मिला और वह दुष्ट अपने सुहृद (राणा प्रताप) से द्वेष करने लगा। उसे तथा उसके चरित्र व कुल को धिक्कार है ॥१७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीरः प्रतापनृपतिः शपथं प्रकुर्वन्-
नुच्चैर्जगर्ज वनसिंह इवातिदृप्तः ।
यावन्न भारतमही भविता स्वतन्त्रा
तावन्न तल्पमधिरुह्य सुखं शयिष्ये ॥१८॥

कर्तुं स्वतन्त्रमथ भारतवर्षदेशं
संगृह्य सैनिकदलं विजयी प्रतापः ।
आरुह्य चाश्वमसिदण्डशिवास्त्रधारी
राज्ञाऽक्बरेण सह योद्धुमना बभूव ॥१९॥

स्याद् मे प्रतापनृपतिर्वशगः कथं हा !
चेत्थं विमृश्य विमृशन् निजमन्त्रिवर्यैः ।
चिन्तन् दिवानिशमहो ! यवनाधिराजः
स्वाभीष्टसाधनविधौ सफलो न भूतः ॥२०॥

वीर प्रताप ने प्रतिज्ञा की और वनसिंह की भांति दृप्त हो गर्जने लगा कि जब तक भारतभूमि स्वतन्त्र नहीं होगी तब तक शय्या पर सुख से नहीं शयन करूंगा ॥१८॥

फिर भारत देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सेना दल इकट्ठा कर घोड़े पर चढ़ तलवार, भाला, त्रिशूल, लिए प्रताप राजा अकबर के साथ युद्ध करने का विचार करने लगा ॥१९॥

इधर अकबर 'प्रताप किस प्रकार मेरे वश में हो' अपने शिष्ट मंत्रियों से विचार विमर्श करने लगा। रात दिन चिन्तामग्न अकबर अपने मनोरथ में सफल नहीं हुआ ।।२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीता मया स्ववशगाः सकला नरेन्द्रा
हा हा ! प्रतापनृपतिर्न वशो ममाऽभूत् ।
हा ! धिक् च मां परमवैभवशालितां मे
चक्रन्द भूपतिरसौ बहु रुद्धकण्ठः ॥२१॥

राजाऽक्बरः कपटनीतिनटोऽतिधूर्तो
वीरं प्रतापनृपतिं विविधैरुपायैः ।
सामादिभिर्न हि शशाक वशं विधातुं
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥२२॥

राज्ञोऽक्बरस्य शमदामसुभेदनीत्या
वीरप्रतापनृपवंशभवा ह्यनेके ।
संलोभिताः सुमिलिता सह चाक्बरेण
किन्तु प्रतापनृपतेर्न मनश्चचाल ॥२३॥

मैंने अनेक राजे वश में कर लिए, पर बड़ा खेद है कि राणा प्रताप मेरे वश में नहीं हुआ। मुझे लानत है, मेरी धनसम्पन्नता को भी धिक्कार है, इस प्रकार अकबर रुद्धकण्ठ चीखने लगा ॥२१॥

अति धूर्त राजा अकबर कपटनीति नट बना सामादि अनेक उपायों से भी राणा प्रताप को वश में न कर सका, ठीक है–धीर पुरुष अपने न्याय मार्ग से कभी च्युत नहीं होते ॥२२॥

राजा अकबर की सामादि नीति से राणा प्रताप के अनेक वंशधर लोभवश हुए अकबर से जा मिले। परन्तु राणा प्रताप का मन विचलित नहीं हुआ ॥२३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यश्चाक्बरस्य कुमतेश्छलनीतिवश्यो
नाऽभूत् कदापि करपालधरास्त्रशूली ।
प्राणैः परैः स निजसंस्कृतिमारिरक्षु-
र्हल्दीतिघाटिसमरे विजयी बभूव ॥२४॥

वीरस्य तस्य सुमतेः नृपतेः सुनीतिं
दक्षाः सुधीरपुरुषा अवबोधयन्ते ।
जानाति पण्डितजनो ननु पण्डितस्य
पाण्डित्यनीतिमितरे तु मुधा वदन्ति ।२५॥

संवेत्ति पद्मकरन्दगुणान् द्विरेफो
मत्तः शिखी च घनगर्जनजानुभूतिम् ।
जानाति दीपकभवांस्तु गुणान् पतङ्गः
स्वातन्त्र्यगौरवगुणान् किल वेत्ति वीरः ॥२६॥

वह वीर खड्ग त्रिशूलधारी कुमति अकबर की छलनीति के वश नहीं हुआ। प्राणों की बाजी लगा अपनी हिन्दु संस्कृति की रक्षा का इच्छुक हल्दी घाटी के युद्ध में विजयी हुआ ॥२४॥

उस वीर पुरुष की सुनीति को धीर दक्ष पुरुष ही जानते हैं। पण्डित के गुणों को पण्डित ही जानता है। हम पाण्डित्य नीति को जानते हैं यह डींग मारनेवाले व्यर्थ वकवाद करते हैं ॥२५॥

भ्रमर ही पुष्परस के गुणों को जानता है। मत्त मयूर मेघ की गर्जना गुण को जानता है। पतंग ही दीपकजन्य गुणों को जानता है। वीर पुरुष स्वतन्त्रता के गुणों को जानता है ॥२६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्याद्भुतैस्तु बलवीर्यगुणैरनेकैः
सैद्धान्तिकैरखिलभूपतिनीतियुक्तैः ।
धन्याऽस्ति सा भरतभूः सुभटैः सुपुत्रैः
सार्थं करोति निजनाम सुवीरसू-र्या ॥२७॥

धन्यस्य तस्य गुणगौरववीरगाथां
गायन्ति वीरवनिताः सुमहोत्सवेषु ।
श्रुत्वा तु वीररसभावभरां सुगाथां
वृद्धोऽपि हर्षभरितस्तरुणायतेऽद्य ॥२८॥

संप्रस्तुतस्य हृदि वीरवरस्य तस्य
गाथासुधाऽद्भुतरसं सततं विधत्ते ।
पाषाणमूर्तिरपि संद्रवतीव यस्य
गाथासुधामयविशुद्धरसेन सिक्ता ॥२९॥

उस वीर राणा प्रताप के अनेक सिद्धान्तभूत समस्त राजनीति युक्त बलवीर्य गुणों से और सुभट मातृभूमि के सुपुत्रों से यह भारत माता धन्य है, ऐसे वीर पुरुष पैदा करके अपने वीरप्रसवा नाम को सार्थक करती है ॥२७॥

वीराङ्गनाएं शुभ उत्सवों पर ऐसे परम धन्य वीर प्रताप की गुण और गौरव गाथा (गीतों में) गाती हैं। जिस वीर की रस भरी वीर गाथा को सुन हर्ष भरे वृद्ध पुरुष भी तरुण समान जोसीले बन जाते हैं ॥२८॥

प्रस्तुत उस बहादुर की सुधा समान गाथा वीर रस को उत्पन्न करती है। जिससे पाषाण मूर्ति भी द्रवित हो उठती है। जो वीरों की कथा सुधा रस से सींची गई है ॥२९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योऽक्षौ बले च खलु भीमसमो धृतौ तु
भीष्मो युधिष्ठिरसमश्च शमे नये च ।
शान्त्याः सुमेरुरथ धर्मसुसेतुरार्यो
वीरो महानमरतां भजते प्रतापः ॥३०॥

मेवाडसिंह इति यं प्रवदन्ति वीरा
धीरा नराः सुमनसा वचसा स्तुवन्ति ।
हल्दीति विश्रुतसुपर्वतराजिमध्ये
जन्यं तु तस्य समभूद्भुवि सुप्रसिद्धम् ॥३१॥

वीरोऽक्बरो यवनसैन्यदलेन सार्धं
चित्तौडदुर्गमवरोद्धुमथाजगाम ।
नानायुधैः परिवृतो विजयाभिमानी
चित्तौडदुर्गनगरं परितो रुरोध ॥३२॥

वह वीर राणा प्रताप बल में भीम के तुल्य, धैर्य में भीष्म के तुल्य, शान्तनीति में युधिष्ठिर के समान था और शान्ति का सुमेरु पर्वत था । वह अब भी अमर है ॥३०॥

जिसे धीर-वीर मनुष्य मन वचन से स्तुति करके मनुष्य सिंह कहते हैं उसका प्रसिद्ध पर्वत मध्यस्थित हल्दी नाम की घाटी पर बड़ा युद्ध हुआ । यह बात लोक प्रसिद्ध है ॥३१॥

अकबर नरेश यवन सेना दल के साथ चित्तौड़ दुर्ग को घेरने के लिए आगया और विजयाभिमानी अकबर ने अनेक अस्त्र-शस्त्रों से युक्त हो चित्तौड़ नगर को चारों ओर से घेर लिया । ३२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राणाप्रतापनृपतिर्धृतशूलहस्त
आरुह्य चेतकहयं ननु वायुवेगम् ।
वीरैर्भटैः परिवृतो विजयाभिमानी
योद्धुं मुदा स्वनगराद् बहिराजगाम ॥३३॥

धृत्वोग्ररूपमथ वीरवरः प्रतापः
सार्धं भटैर्भटवरैर्नरसिंहरूपैः ।
आदाय घोरपरिघं त्वहिकालरूपं
लक्षाधिकान् परिजघान रिपूंस्त्वसंख्यान् ॥३४॥

कश्चिन्निकृत्तवदनः पतितो धरायां
कश्चित्तु कर्तितभुजो गजशायोभूतः ।
कश्चित्सुतीक्ष्णविशिखैः परितश्च बिद्धो
हा हा ! लपन् बहुविधं गजतः पपात ॥३५॥

विजयी राणा प्रताप भाला हाथ में लिए वायु वेग चेतक घोड़े पर चढ़ अनेक योद्धाओं समेत सहर्ष अपने नगर से बाहर युद्ध करने के लिए निकला ॥३३॥

फिर अनेक सिंहरूप योद्धाओं सहित उग्ररूप धारण किए राणा प्रताप सर्पवत् कालरूप भयङ्कर तलवार खींच लाखों (असंख्य) शत्रुओं को मारने लगा ॥३४॥

किसी का सिर कट गया; कोई पृथ्वी पर (विद्ध हो) गिर पड़ा, किसी की भुजा कट गई। कोई (राणा प्रताप के) तीक्ष्ण बाणों से घायल हो हा हा प्रलाप करता हुआ हाथी पर से गिर पड़ा ॥३५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केषां तु वक्षसि गदाद्यभिघातजेन
रक्तेन भूतलमभूत् सकलं सुरक्तम् ।
जंघा-भुजा-कटितटानि शिरांसि केषां-
चिच्चिच्छिदुर्युधि भटा भयदा ह्यरीणाम् ॥३६॥

चम्वांनृपस्य धृतकार्मुकशूलहस्ताः
सेनाधिपा हयगजेष्वधिरुह्य वीराः ।
धृत्वा सुसाहसमहो ! यवनीयसेनां
चित्तौडदुर्गसमरे शतधा निजघ्नुः ॥३७॥

केचिन्निकृत्तशिरसो भुवि सन्निपेतुः
केचिद् रणाङ्गणमपास्य विदुद्रुवुश्च ।
इत्थं प्रतापनृपतेः प्रबलेन भीता
सेनाऽकबरस्य महती दशदिक्षु याता ॥३८॥

किन्हीं योद्धाओं की छाती पर गदा का घात होने से बहते हुए रक्त से तमाम भूतल लाल वर्ण हो गया और शत्रुओं को भय देने वाले (क्षत्रिय) योद्धा किन्हीं शत्रुओं की जंघा-भुजा कटि प्रदेश तथा सिर काटने लगे ॥३६॥

राणा प्रताप के वीर सैनिक धनुष बाण, त्रिशूल हाथ में लिए घोड़ों हाथियों पर चढ़ बड़े साहस के साथ मुसलमानी सेना पर (टूट पड़े) और चित्तौड़ दुर्ग के युद्ध में बड़े साहस के साथ सैकड़ों प्रकार शत्रुओं को) मारने लगे ॥३७॥

कुछ एक सिर कट जाने से पृथ्वी पर गिर पड़े । कुछ रण के मैदान को छोड़ भागने लगे । इस प्रकार अकबर की सेना (मैदान छोड़) दस दिशाओं में भाग गई ॥३८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्तौडदुर्गसमरे तु हताहतानां
संख्यानुमानमभवन् न हि सैनिकानाम् ।
उष्ट्रा हया अपि गजास्तु हताहता ये
तद्रक्तवारिसरिता वहति स्म घोरा ॥३९॥

राजाऽक्बरो हतबलोऽपि पराजितो ना-
भूद् यावनी परिवृढा विपुला हि सेना ।
हा ! क्षत्रियास्तु धृतकेशरवर्णचैला:
प्राणैः पणैर्युयुधिरेऽरिगणैः प्रहृष्टाः ॥४०॥

ये क्षत्रिया युधि हता अबलास्तु तेषां
धृत्वाशु जौहरविधिं व्रतकर्शिताङ्ग्यः ।
ध्यात्वा पतिं हृदि मुदा ज्वलिते चिताग्नौ
स्नाताः प्रविश्य पतिदेवपथं प्रयाताः ॥४१॥

चित्तौड़ दुर्ग के महायुद्ध में हताहत सैनिकों का अनुमान नहीं लग सका । जो ऊँट, घोड़े, हाथी हताहत हुए उनकी रक्तधारा की नदी बड़े भयंकर रूप में बह रही थी ।।३९।।

राजा अकबर हताहत सेना होने पर पराजित नहीं हुआ । कारण उसकी सना बहुत थी । क्षत्रिय लोग केसरिया बाणा बना प्रसन्न हो प्राणों की बाजी लगा शत्रुगण से युद्ध कर रहे थे ।।४०।।

जो क्षत्रिय लोग युद्ध में मरे उनकी स्त्रियां जो जौहर व्रत से कृशाङ्ग हो गई थीं. हृदय में अपने पति का ध्यान कर, स्नान कर, जलती चिताग्नि में बठ पतिदेव की पथानुगामिनी बन गई ।।४१।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्या तु सा भरतभूर्जननी सुधन्या
प्रासूत या बलिभवान् सुसुतान् बलिष्ठान् ।
धन्याः स्त्रियोऽपि खलु ताः समरे हतेषु
या भर्तृषु प्रविविशुर्ज्वलिते चिताग्नौ ॥४२॥

स्तुत्याः पवित्रहृदया वनिताः सदा ता
याश्चान्वयुः प्रियपतिं समरे हतं स्वम् ।
देव्योऽपि या युधि मुदाऽरिबलेन सार्धं
पस्पर्धिरे गतभयाः खलु ताः सुधन्याः ॥४३॥

चित्तौडदुर्गमधिकृत्य पिशाचरूपो
धूर्तोऽक्बरः समवलोक्य चिता ज्वलन्तीः ।
चित्तौडदुर्गजनतां सकलां निहन्तुं
सेनां समादिशदहो ! धिगशिष्टकृत्यम् ॥४४॥

भारत भूमि को धन्य है, उन वीर माताओं को धन्य है, जिन्होंने बलिदान होने वाले बलिष्ठ पुत्रों को उत्पन्न किया। उन स्त्रियों को धन्य है, जो युद्ध में पतियों के मरने के बाद जलती चिता में प्रवेश कर गईं ॥४२॥

श्लाघा योग्य उन पवित्र हृदय वाली स्त्रियों को धन्य है, जो युद्ध में पति के मरने पर (जौहरव्रत कर) अपने पति का अनुसरण कर गईं। उन देवियों को भी धन्य है जो युद्ध में शत्रु दल के साथ निर्भय हो मुकाबला करने लगीं ॥४७॥

धूर्त पिशाचरूप अकबर ने चित्तौड़ दुर्ग में जलती हुई चिताओं को देख चित्तौड दुर्ग की जनता को मारने का (कत्ले आम) आदेश दे दिया। ऐसे अशिष्ट कृत्य के लिए धिक्कार है ॥४४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राणाप्रतापनृपतिर्निजदुर्गभङ्गं
ज्ञात्वा विमृश्य च सुमित्रजनैः सुदक्षैः ।
तूर्णं सुगुप्तविधिना निजदुर्गतो हा !
यातो बहिर्यवनवंशदवानलोऽसौ ॥४५॥

चन्द्रो जहाति न हि शीतलतां कदापि
वह्निश्च न त्यजति दाहकतां स्वशक्तिम् ।
शैत्यं गुणं न हि विमुञ्चति वारिधारा
नैजं कुलोद्भवगुणं न जहाति वीरः ॥४६॥

राज्ञोऽक्बरस्य शमदामसुभेदनीत्या
संलोभिता नृपतयश्च नृपं प्रतापम् ।
स्वं भ्रातरं स्वकुलजं ह्यपि हा विहाय
संसेविरे यवनराजविराट्सेनाम् ।४७॥

राणा प्रताप ने अपने किले का भंग (तहस नहस) जान और अपने शिष्ट एवं दक्ष मित्रजनों से विचार विमर्श कर बहुत जल्दी गुप्त रूप से यवन वंश का दावानल वह वीर बाहर निकल गया ॥४५॥

चन्द्रमा अपनी शीतलता को नहीं छोड़ता। अग्नि अपनी दाहकशक्ति को नहीं छोड़ती, जलधारा अपने शीतल गुण को नहीं छोड़ती, वीर पुरुष अपने परम्परागत गुण को नहीं छोड़ता ॥४६॥

राजा अकबर की साम दाम भेद नीति से लोभी हुए राजे अपने वंशधर भाई राणा प्रताप को छोड़ मुसलमानी विराट् सेना में दाखिल हो गए ॥४७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हा ! क्षत्र बन्धुरधमः कुलधूमकेतुः
क्षात्रं स्वधर्ममपहाय च मानसिंहः ।
राज्ञेऽक्बराय समदाद् भगिनीं निजां हा !
हा! हन्त! हन्त! किमपारमहोऽतिकष्टम् ॥४८॥

ज्ञात्वा प्रतापनृपतिर्नृपनीतिदक्षो
ह्येकाकिनं स्वयमहोऽहिसमः श्वसँश्च ।
सार्धं कलत्रसुतशिष्टसुमित्रवर्गै-
श्चित्तौडभूमिमपहाय गतो वनान्ते ॥४९॥

राजाऽक्बरोऽतिनिघृणो निजकूटनीत्या
हिन्दून् नृपान् विघटितान् सकलान् विधाय ।
मेवाडराज्यमखिलं स्ववशेऽपि नीत्वा
वीरप्रतापनृपतो बहुधा शशङ्के ॥५०॥

हा ! क्षत्रियों में अधम नीच अपने कुल का धूमकेतु (कलङ्क) मानसिंह जिसने अपने क्षत्रिय धर्म को छोड़ अपनी बहिन को अकबर को दे दिया। अफसोस ! इससे बढ़कर और क्या अपार दुःख होगा ॥४८॥

नृपनीतिदक्ष राणा प्रताप अपने को अकेला जान सर्प की भांति श्वास लेता हुआ अपनी स्त्री व पुत्र शिष्ट मित्रजनों के साथ चित्तौड़ भूमि को छोड़ वन में चल पड़ा। ४९॥

निलज्ज अकबर ने हिन्दु राजाओं में फूट डाल दी कूटनीति द्वारा) और समस्त मेवाड़ राज्य को अपने अधीन कर लिया। इतना होने पर भी अकबर वीर प्रताप से प्रायः शङ्कित रहता था। ५०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राणाप्रतापनृपतिः सह पुत्रदारै-
र्भ्राम्यन् दिवानिशमसौ गिरिकन्दरासु ।
मेवाडराज्यमरिजुष्टमथो विभाव्य,
दन्दह्यमानहृदयोऽग्निरिवोच्चकाशे ॥५१॥

दिल्लीपतिर्निखिलभारतवर्षदेशे
लब्ध्वाधिपत्यमपि शङ्कितमानसोऽभूत् ।
वीरप्रतापनृपतिर्न वशे ममेति
निष्कण्टकं तु निजराज्यमसौ न मेने ॥५२॥

दिल्लीश्वरो निजवशं नृपतिं प्रतापं
कर्तुं स्वशिष्टपुरुषं प्रियमानसिंहम् ।
संप्रैषयत् कपटनीतिपटुं कृतघ्नं
वीरप्रतापनिकटे परमादरेण ॥५३॥

राणा प्रताप अपने स्त्री पुत्रों के साथ रात दिन पहाड़ों की गुफाओं में घूमता फिरता था और मेवाड़ राज्य को शत्रुओं के हाथों में गया हुआ जानकर अत्यन्त दग्धहृदय हो रहा था तथा अग्नि के समान देदिप्यमान था ॥५१॥

यद्यपि दिल्लीपति अकबर ने समस्त भारत पर अपना आधिपत्य जमा लिया तथापि शंकित मन रहता था। उसने जबकि राणा प्रताप मेरे वश में नहीं है तो अपने राज्य को निष्कण्टक नहीं माना ॥५२॥

दिल्लीश्वर अकबर ने प्रताप को अपने वश में करने के लिए अपने शिष्ट पुरुष मानसिंह को (जो कपटनीति में बड़ा दक्ष था व कृतघ्न था) बड़े आदर से राणा प्रताप के पास भेजा ॥५३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गत्वा प्रतापकुटजे विपिनेऽतिगुप्तेऽ-
द्राक्षीत् प्रतापतनयं प्रियमानसिंहः ।
पुत्रः प्रतापनृपतेर्बहुमानपूर्व-
मातिथ्यमाचरितवान् स्वगृहागतस्य ॥५४॥

पृष्टे प्रतापनृपतेः कुशलादिवृत्ते
रुग्णो मदीयजनको नृपसूनुरूचे ।
संकेतितो नृपतिना तदशिष्टवृत्ती-
र्नैनं प्रतापनृपतिर्मनसाऽभ्यनन्दत् ॥५५॥

क्षात्रं स्वधर्ममपहाय विशुद्धमार्यं
हा चाक्बरेण मिलितः कुलधूमकेतुः ।
मानं न चार्हति यतोऽधम एष धूर्त-
स्तस्मान्न तेन सह संबुभुजे नरेन्द्रः । ५६॥

मानसिंह ने वन में अति गुप्त राणा प्रताप की कुटिया में जाकर प्रताप के पुत्र को देखा और प्रताप के पुत्र ने बड़े मान से घर में आए हुए का आतिथ्य सत्कार किया ।।५४।

राणा प्रताप का कुशलादि समाचार पूछने पर राणा प्रताप के पुत्र ने यह उत्तर दिया कि मेरे पिताजी बिमार हैं। जिसे उसके अशिष्ट व्यवहार से प्रताप ने संकेतित कर दिया था। राणा प्रताप ने उसका मन से भी अभिनन्दन नहीं किया ।।५५।।

यह कुल का धूमकेतु (कलंकरूप) अपने विशुद्ध क्षत्रिय धर्म को छोड़कर अकबर से जा मिला। यह अधम धूर्त मान के योग्य नहीं है। इसलिए प्रताप ने उसके साथ भोजन नहीं किया। ५६।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञात्वा तिरस्कृतिमसाविति मानसिंहः
स्थानं स्वकं प्रतिययौ तदनिष्टहृष्टः ।
संप्राप्य चाक्बरनृपं विमनाः स्ववृत्त-
मानुक्रमं सविनयं प्रतिभाषते स्म ॥५७॥

राजन् ! वदामि किमु हा ! स्वकथां तवाग्रे
यन्मां प्रतापनृपतिर्न हि सच्चकार ।
वाचापि नैव वदति स्म वृथाभिमानी
ह्येतत्तु शूलमिव मे हृदयं दुनोति ॥५८॥

यद्यस्ति भूपवर ! ते मयि चानुराग-
स्तूर्णं प्रतापमदमर्दनमाविधेहि ।
निष्कण्टकं तु निजराज्यमथाशु कृत्वा
लोके मुदा सुखितमास्व शतं समास्त्वम् ॥५९॥

इस प्रकार मानसिंह अपना तिरस्कार जान प्रताप का अनिष्ट करने का इच्छुक उदास मन वापिस अपने स्थान पर लौट गया। और अकबर के समक्ष सविनय क्रमशः सब वृत्त कह सुनाया, वह बड़ा उदास था ॥५७॥

राजन् ! तुम्हारे आगे क्या कहूं प्रताप ने मेरा मन से भी आदर नहीं किया। यह मुझे भाले की तरह हृदयविदारक है ॥५८॥

हे भूप ! मुझ पर यदि तेरा प्रेम है तो शीघ्र प्रताप का मान मर्दन करो और अपने राज्य को निष्कण्टक बना आनन्द से सौ वर्ष राज्य करो ॥५९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमन् ! प्रतापनृपतिः सह पुत्रदारै-
राहिण्ड्यते प्रतिवनं क्षुधया कृषाङ्गः ।
अद्यापि भो नरपते ! समयोऽनुकूल-
स्तद्बन्धनाय सुलभो हि विधिर्विधेयः ॥६०॥

श्रीमानसिंहगदितं परिभाव्य राजा
हर्षान्वितः स्मितमुखः परिविस्मितश्च ।
चित्ते शुशोच सहसा ननु मानसिंहो
विश्वासभाजनमयं भवितुं न योग्यः ॥६१॥

योऽयं विहाय निजवंशभवान् स्वबन्धून्
सेनादले सुमिलितो मम मानसिंहः ।
यो नास्ति हन्त! निजबन्धुजनानुरागी
स स्यात् कथं हितकरो मम लम्पटोऽयम् ॥६२॥

श्रीमान् जी ! प्रताप नृपति भूख प्यास से क्षीण शरीर हुआ अपने पुत्र व स्त्री के साथ वन-वन मारा-मारा फिरता है। राजन् ! अब मौका है। उसके पकड़ने के लिए कोई सुलभ उपाय सोचो ॥६०॥

श्री मानसिंह की बात को विचार करके राजा अकबर स्मित-मुख हो आश्चर्यान्वित होगया और वह मन में सोचने लगा कि मानसिंह विश्वासपात्र होने के योग्य नहीं ॥६१॥

जो यह अपने वंशधर बन्धुजनों को छोड़कर हमारे सेना दल में शामिल होगया। कैसे यह लम्पट (पिट्ठू) हमारा हितकर हो सकता है ॥६२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आस्तामलं ह्यकथयेति विचार्य राजा
हर्षप्रकर्षभरितः स्वजनं बभाषे ।
मन्त्रिप्रवर्य ! भगवन् ! प्रिय मानसिंह !
त्वं चासि नीतिनिपुणः स्वयमेव विज्ञः ॥६३॥

श्रुत्वा वचो वरपतेर्यवनाधिपस्य
हर्षेण चेत्थमवदत् ननु मानसिंहः ।
राजन् ! विशालतमसैन्यदलं विधाय
पूर्वं ततो बलदलं युधि योजनीयम् ॥६४॥

इत्थं परस्परविचारविमर्शपूर्वं
सेनादलं सुविपुलं सुदृढं प्रकर्तुम् ।
सामन्तकान् निजजनांश्च समाजुहाव
राजा प्रतापभयतो हृदि वेपमानः ॥६५॥

अप्राणि कथा से क्या प्रयोजन ऐसा सोच राजा सहर्ष अपने (कृत्रिम) स्वजन से बोला। हे मन्त्रिवर्य भगवन् मानसिंह ! तू ही इस विषय में नीतिनिपुण है और स्वयं विज्ञ है ॥६३॥

यवनराज अकबर की वाणी सुनकर बड़े हर्ष से इस प्रकार मानसिंह कहने लगा। हे राजन् ! पहले तो बड़ी विशाल सेना इकट्ठी करो। तत्पश्चात् समस्त सेनादल युद्ध में झोंक दो ॥६४॥

राणा प्रताप के भय से कंपायमान अकबर ने इस प्रकार परस्पर विचार विमर्श करके सेना को दृढ़ बनाने के लिए सामन्तकों तथा अपने स्वजनों को बुलाया ॥६५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामादिना सुविधिना लिखितं दलैकं
पूर्वं प्रतापनृपतेर्निकटे प्रहेयम् ।
पत्रं निरीक्ष्य ननु तद् हृदये विचारः
सन्धेर्विधौ यदि भवेद् वरमेष मार्गः ॥६६॥

मध्येसभं नरपताविति भाषमाणे
सामन्तकैः स्मितमुखैः करतालपूर्वम् ।
राज्ञः सुनीतियुतचारुतरो विचार
उच्चैःस्वरेण नितरामनुमोदितश्च ॥६७॥

प्रेयन् ! प्रतापनृपते ! कथयैकवारं
यद्भारते नृपतिरक्बर एव चैकः ।
मां भूपमेव वदते भवते सहर्षं
राज्यार्द्धभागमपि ते सुसमर्पयिष्ये ॥६८॥

पहले साम दाम दण्ड भेद आदि विधि से लिखित एक पत्र राणा प्रताप के पास भेजा जावे। पत्र को पढ़कर उसके मन में सन्धि करने का विचार हो जावे तो बड़ा अच्छा रास्ता हो जावे ॥६६॥

सभा के बीच इस प्रकार राजा (अकबर) के कहने पर स्मित मुख सभी सामन्तकों (राजाओं) ने करताल ध्वनि पूर्वक राजा का यह नीतियुक्त सुन्दर विचार ऊँचे स्वर से अनुमोदित किया ॥६७॥

हे प्रिय प्रताप तू एक बार यह कह दे कि भारत का सम्राट् (राजा) एक अकबर है। मुझे राजा मानते हुए आपको सहर्ष राज्य का आधा भाग समर्पित कर दूंगा ॥६८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्थं नृपेण लिखितं नृपनामसमुद्रा-
चिन्हाङ्कितं विनयभावभरं सुपत्रम् ।
आदाय राजपुरुषः प्रययावरण्ये
वीरप्रतापनिकटे विकटेऽतिगम्ये ॥६९॥

वीरः प्रतापनृपतिस्तु कदाप्यरण्ये
भ्राम्यन् कदापि गिरिगह्वरकन्दरासु ।
भ्राम्यन् कदाचन तु पर्वतराजिमध्ये
रात्रिंदिवं विधिवशात् समयं विनिन्ये ॥७०॥

हा ! चैकदा सुरचिते तृणबीजचूर्णै-
र्भोक्तुं मुदा करधृते करपट्टिके द्वे ।
व्यात्ताननो वनभवः कुबिडाल एको
जग्राह हन्त ! करतो नृपबालिकायाः ॥७१॥

इस प्रकार राजा के द्वारा लिखित तथा राजमुद्रा (मोहर) चिन्ह से अङ्कित विनयभावभरित सुन्दर पत्र को लेकर राजपुरुष (दूत) प्रताप के पास विकट अतिगम्य वन की ओर चल पड़ा ॥६९॥

बीर राणा प्रताप कभी वन में, कभी पहाड़ों की भयंकर गुफाओं में घूमता हुआ पहाड़ी प्रदेश में भाग्यवश दिन रात अपने समय को बिता रहा था ॥७०॥

हा ! एक बार घास फूस के चूर्ण से बनाई हुई दो रोटियों को जो राणा प्रताप की बेटी हाथ में (खाने के लिए) उठाए हुए थी उनको हाथों में से एक जंगली बिलाव मुंह फाड़कर छीन ले गया ॥७१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्ट्वा विडालकृतनाटकदृश्यमेवं
हा हेति हन्त ! नृपती रुदतीं स्वपुत्रीम् ।
चित्ते शुशोच मम किं वनजीवनेन
यद् दारिका मम वने क्षुधयार्दिता हा ! ॥७२॥

या मे प्रिया स्मितमुखी महिषीपदाढ्या
हर्म्ये स्थिता न हि कदाप्यजहात् स्वतल्पम् ।
साऽऽहिण्ड्यते प्रतिवनं क्षुत्क्षामकण्ठा
हा हन्त हन्त ! मम जीवनमद्य गर्ह्यम् । ७३॥

प्रासादतो न हि कदापि सुता मदीया
याता बहिर्विविधभोगरता सदा ये ।
ते चाद्य हन्त! नितरां मम भाग्यदोषाद्
मध्येवनं प्रतिदिनं क्षुधिता भ्रमन्ति ॥७४॥

इस प्रकार राणा प्रताप विडालकृत नाटक को देख एवं हा ! हा ! प्रलापपूर्वक रोती हुई अपनी बालिका को देख अफसोस के साथ सोचने लगा कि मेरे वन्यजीवन को धिक्कार है जो भूख से पीड़ित मेरी बच्ची रो रही है ।।७२॥

जो मेरी स्मितमुखी प्रिया (राजराणी। महल में बैठी कभी भी सेज से नीचे पैर नहीं रखती थी, आज वह भूख प्यास से जिसका गला सूख गया है, मारी २ वन में भटकती फिरती है । हा ! मेरे इस निन्दनीय जीवन को धिक्कार है । ७३॥

मेरे पुत्र जो तरह तरह के पदार्थ खाते थे, महलों से बाहर कभी नहीं गए । हा ! वे आज मेरे भाग्य दोष से प्रतिदिन भूखे प्यासे वन-वन में भटकते फिरते हैं ।।७४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योऽहं प्रभातसमयेऽप्यतिगाढनिद्रा-
माप्तः सदा सुनितरां निजरम्यहर्म्ये ।
वैतालिकैः प्रतिदिनं प्रतिबोधितश्च
सोऽहं शिवाशतरुतैर्विजहामि निद्राम् ॥७५॥

याताः पुरा मम भयानकखड्गभीताः
सिंहादयो गिरिगुहासु वनं विहाय ।
मार्जार आच्छिनदहो ! करपट्टिकां मे
हा! हा! सुताकरधृतां खलु धूर्त एषः ॥७६॥

म्लानोन्मुखे नरपतौ परिशोचतीति
दूतोऽक्बरस्य सहसैव समाजगाम ।
नत्वा नृपं सविनयं खलु पत्रमेकं
श्रीमत्प्रतापचरणेषु समर्पयच्च ॥७७॥

जो मैं अपने रमणीय महल में प्रातःकाल की गहरी नीन्द में पड़ा रहता था, उस समय मुझे स्तुति पाठ करने वाले वैतालिकजन जगाते थे, हाय ! आज मेरी गीदड़ियों की आवाज से (वन में) निन्द्रा भंग होती है ॥७५॥

और मेरी भयंकर तलवार से भयभीत हो सिंहादि जानवर वन को छोड़कर पहाड़ों की गुफाओं में घुस जाते थे। आज हाय ! यह चालाक बिलाव मेरी पुत्री के हाथ से रोटी छीन कर ले गया ॥७६॥

इस प्रकार म्लान कान्तिवाले राणा प्रताप के सोचते हुए अचानक अकबर का दूत आगया और राणा को प्रणाम करके एक पत्र प्रताप के श्रीचरणों में भेंट कर दिया ॥ ७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्ताचिताञ्चितवपुर्नृपतिः प्रतापः
पत्रं सुवाच्य सहसैव सुविस्मितोऽभूत् ।
कर्तव्यमूढ इव धैर्ययुतोऽपि चित्ते
द्वैविध्यभावभरितः परितः शशङ्के ॥७८॥

अङ्गीकरोमि यदि शासनमक्बरस्य
निन्द्यं भवेद् मम तपोमयजीवनं हा !
आयान्तु हन्त ! विघ्नान्यपि नैव चिन्ता
सर्वं सहे विधिवशाद् न जहामि धर्मम् ॥७९॥

इत्थं विमृश्य मतिमान् नृपतिः प्रतापो
दिल्लीपतिं प्रतिलिलेख दलं सहर्षम् ।
तथ्यं कथं यवनराट् कथने तवास्ते
धूर्ते नटे विटजने क्व नु सत्यताऽऽस्ते ॥८०॥

अति चिन्तामग्न राणा प्रताप ने पत्र को पढ़ा और अति विस्मित हो गया, किंकर्त्तव्यमूढ़ राणा धैर्ययुक्त द्विविधा में पड़ गया और शङ्कित मन हो गया ॥७८॥

हाय ! अगर मैं अकबर का शासन स्वीकारूं तो मेरा तपोमय जीवन निन्दनीय हो जावेगा । चाहे कितने ही संकट आएं कोई चिन्ता नहीं । भाग्यवश सब कष्ट सहूंगा पर (क्षात्र) धर्म को नहीं छोड़ूंगा ॥७९॥

इस प्रकार बुद्धिमान् प्रताप ने सहर्ष अकबर को एक पत्र लिखा कि रे यवनराज ! तेरे कथन में कैसे सत्यता हो सकती है । क्या कभी धूर्त-नट विट (वेश्यागामी) जन में सच्चाई आ सकती है ॥८०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्रं प्रतापलिखितं समुदात्तवृत्त-
मादायराजपुरुषे स्वपुरीं प्रयाते ।
सेनादलं सुविपुलं सुदृढं विधातु-
मैच्छत् प्रतापनृपतिर्निजसाहसेन ॥८१॥

सेनादलेन विपुलेन सुसज्जितोऽसा-
वायास्यतीति यवनः समरं विधातुम् ।
धूर्तोऽक्बरो भरतभूविजयाभिमानी
तस्माद् मयापि खलु सैन्यदलं नियोज्यम् ॥८२॥

इत्थं विचिन्तयति वीरवरे प्रतापेऽ-
रण्येऽरिभिर्बहुविधं परिशङ्कमाने ।
श्रीभामाशाह इति नामधरश्च कश्चि-
दायात एकवणिजो धनदेन तुल्यः ॥८३॥

राणा प्रतापलिखित तथा गम्भीरवृत्तभरे पत्र को लेकर दूत के चले जाने पर राणा प्रताप ने अपनी सेना को विस्तृत तथा मजबूत बनाने का बड़े साहस पूर्वक विचार किया ॥८१॥

क्योंकि विपुल सेनादल से सज्जित यवन (अकबर) युद्ध करने को आवेगा । वह बड़ा धूर्त है, भारत पर विजय (सर्वत्र) चाहता है । अतः मुझे भी सेना शक्ति को बढ़ाना चाहिये ।८२॥

इस प्रकार वीर प्रताप सोच ही रहा था (अकस्मात्) शत्रुओं से बहु प्रकार (शंकायमान) वन में एक कुवेर के समान श्री भामाशाह नाम का वैश्य आ निकला ॥८३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वाभिवादनविधिं नृपतेः सहर्षं
बुद्ध्वा तदीयपरिचिन्तनकारणं च।
श्रीभामशाह उचितां निजराज्यभक्ति
राज्ञः समक्षमिति दर्शयते स्म दानी ॥८४॥

नैवं नरेन्द्र! कुरु चिन्तनमार्यवीर!
भूपेन्द्र! हन्त! मयि जीवति भारतेन्दो!।
पार्श्वेऽस्ति देव! मम यो बहुवित्तराशि-
स्तं तेऽर्पयामि निजदेशहिताय राजन्!॥८५॥

संतोषदां सुविपुलां भृतिमार्य! दत्त्वा
कार्या नवीनरचना नवसैनिकानाम्।
उक्त्वेति गुप्तविधिना प्रियभामशाहो
राज्ञेऽर्पयत् सुमुदितो धनकोषराशिम् ॥८६॥

सहर्ष वह राजा को प्रणाम करके और राजा की चिन्ता का कारण जान वह दानी वैश्य राजा के सामने अपनी राज्य भक्ति दिखाने लगा ॥८४॥

हे नरेन्द्र ! हे आर्यवीर ! इस प्रकार चिन्ताकुल न हो। हे राजन् भारत के चन्द्रमा मेरे जीते हुए चिन्ता मत कीजिये। मेरे पास जो द्रव्य है उसे मैं देशहितार्थ आपको भेंट करता हूं।८५॥

हे आर्य ! सन्तोषजनक नौकरी देकर नवीन सेना इकट्ठी कीजिये। इस प्रकार कहकर भामाशाह ने गुप्त प्रकार से तमाम धन कोष राशि राणा प्रताप को अर्पित कर दी ॥८६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन्यः स दानिवरभूषणभामशाहः
कीर्त्या सदा विजयतेऽमरतामुपेतः ।
यः स्वीयगुप्तधनकोषमुदारवृत्तो
देशार्थमर्पयदसावभिनन्दनीयः ॥८७॥

किं हन्त! तेन धनिना द्रविणं तु यस्य
लोकोपकारकृतये व्ययमेति नैव ।
नायु. स्थिरं न च धनानि स्थिराणि लोके
मत्वेति दानिवरभामसमो भव त्वम् ॥८८॥

लब्ध्वा विभूतिमतुलां समरेऽतिदक्षां
सेनां न्ययुङ्क्त नृपतिर्नवसैनिकानाम् ।
विश्वासपात्रसुभटैर्नृपनीतिविज्ञै-
र्नक्षत्रमध्यगतचन्द्र इवोद्दिदीपे ॥८९॥

परम दानी भामाशाह को धन्य है जो अपनी कीर्ति से अमर है। जिसने उदारता से अपने गुप्तधनकोष को देश के लिए सौंप दिया। यह दानी सदा श्लाघनीय है ॥८७॥

उस धनी से क्या जिसका धन लोकोपकार में नहीं लगता। आयु, धन सदा नहीं रहते यह समझकर दानी भामाशाह के मार्ग का अनुसरण करो ॥८८॥

फिर राणा ने अतुल धन सम्पत्ति पाकर चतुर नवीन सैनिकों को सेना नियुक्त की। विश्वासपात्र नृपनीतिदक्ष योद्धाओं के मध्य राणा इस प्रकार चमकता था जैसे नक्षत्रमण्डल के मध्य चन्द्रमा ॥८९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आज्ञावशात् क्षितिपतेर्यवनाधिपस्य
सेनाधिपा नियुयुजुर्निजसैन्यवर्गम् ।
उष्ट्रैर्गजैरथहयैश्च पदातिभिश्च
रम्या चमूर्नरपतेः प्रययावपाच्याम् ॥६०॥

तद्धूलधूसरमभूत् सकलं नभश्च
धूम्रायिता दशदिशश्च धरा समस्ता ।
सेनां नृपस्य दशदिक्षु वनेषु यान्तीं
दृष्ट्वा जनाः प्रलयकालमिवातिभीताः ॥६१॥

इत्थं वनान्युपवनानि विनाशयन्ती
ग्राम्यान् जनांश्च नितरां परिपीडयन्ती ।
सेनाक्बरस्य महती हलदीतिघाटी
क्षेत्रे प्रतापनृपतो युयुधे प्रसिद्धे ॥६२॥

इधर अकबर राजा की आज्ञा से सेनाधिप (अपनी २) सेना को नियुक्त करने लगे । अकबर की ऊंटों, हाथियों, घोड़ों पर तैनात तथा पैदल सेना दक्षिण दिशा की तरफ चल दी ॥६०॥

उस समय तमाम आकाश मण्डल धूलि से धूसर (मैला) हो गया । तमाम दिशाएं व पृथ्वी मण्डल धूम (मटियाला) वर्ण सा हो गया । अकबर की सेना (जो दसों दिशाओं में फैल रही थी) को देख आदमी प्रलय काल आगया यह जान भयभीत थे ॥६१॥

इस प्रकार वन उपवनों का विनाश करती हुई, तथा ग्रामीण जनों को पीड़ित करती हुई अकबरी सेना हल्दी घाटी के मैदान में प्रताप की सेना से भिड़ी ॥६२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्ट्वा प्रतापनृपतिर्यवनेशसेनां
भीमां महाघनघटामिव गर्जयन्तीम् ।
उच्चैर्जगर्ज निजसैन्यदलेन सार्धं
शूलं दधत् करतले तुरगाधिरूढः ॥९३॥

युद्धं महाद्भुततमं तुमुलं बिभत्सं
जातं प्रतापनृपतेर्यवनैरसंख्यैः ।
शस्त्रैः परस्परहतैर्युधि सैनिकैश्च
व्याप्तं धरातलमभूद् हलदीप्रदेशे ॥९४॥

धृत्वा करालपरिघं नृपतिः प्रतापो
वन्यो बुभुक्षितमृगेन्द्र इवातिदृप्तः ।
साक्षाद् यमेन सदृशो यवनाधिपस्य
शत्रोर्बलेऽपरिमिते प्रविवेश धीरः ॥९५॥

हाथ में भाला लिए, घोड़े पर चढ़े राणा प्रताप बादल की घोर घटा के समान भयानक मुसलमानी सेना को गर्जती हुई देख कर अपने सेनादल के साथ गर्जने लगा ॥९३॥

राणा का यवनों के साथ बड़ा अद्भुत-तुमुल घृणोत्पादक युद्ध हुआ। हत हुए (शस्त्रों द्वारा) सैनिकों की असंख्य लाशें हल्दी घाटी प्रदेश पर दिखाई पड़ती थीं। ९४।

वन के भूखे शेर के समान रक्तनेत्र और यमराज के सदृश राणा प्रताप भयङ्कर तलवार खींचे हुए अपरिमित शत्रु की सेना में जा घुसा ॥९५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीरं प्रतापनृपतिं धृतखड्गशूलं
कोपारुणेक्षणमहीन्द्रमिव प्रकुप्तम् ।
सेनाक्बरस्य महती तु विलोक्य हाहे-
त्युच्चै रुदन्ती बहुभीतियुतेव जाता ॥९६॥

शूलेन कालसदृशेण भयङ्करेण
युद्धेऽवधीच्च यवनान् नृपतिः प्रतापः ।
उष्ट्राद्हयाच्च गजतः पतिताः सशस्त्रा
हा सैनिका युधि हता भुवि शेरते स्म ॥९७॥

खड्गेन दक्षिणकरे सुधृतेन वामे
हस्ते स्थितेन सुदृढेन परश्वधेन ।
एवं लसन् नरपतिर्बहु साहसेन
हस्तद्वयेन रिपुसैन्यदलं जघान ॥९८॥

हाथ में तलवार, त्रिशूल लिए लालनेत्र किए शेषनाग की भांति अतिक्रुद्ध हुए राणा प्रताप को देखकर अकबर की सेना हा-हा रुदन मचाती हुई भयभीत हो रही थी ॥९६॥

राणा प्रताप काल समान भयंकर भाले से युद्ध में मुसलमानों को मार रहा था । बहुत से सैनिक ऊँटों से हाथी से नीचे पृथ्वी पर पड़े (मानो) सो रहे थे ॥९७॥

राणा के दाहिने हाथ में तलवार थी, बांयें हाथ में दृढ़ कुल्हाड़ा था, इस प्रकार शोभायमान राजा दोनों हाथों से रिपु सेना को मार रहा था ॥९८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धृत्वा सुसाहसमथो नृपसैनिकास्तु
सिंहा इवाक्बरनृपस्य बल प्रविष्टा: ।
शत्रून्निजघ्नुरसिभिर्धृतकौक्षिकेया
लक्षाधिकाननलरूपसमानरूपा: ॥९९॥

हल्दीप्रदेशसमरे विजयाभिकामा:
शूरा नृपस्य यवनीयबले प्रविष्टा: ।
प्राणै: पणैर्युयुधिरेऽग्निरिव प्रदीप्ता
युद्धं तु विस्मयकरं समभूदरीणाम् ॥१००॥

युद्धे परस्परहतैर्बलिभि: सुयोधै-
र्हल्दीप्रदेशगिरिराजिरभूद्विचित्रा ।
युद्धे हताहतबलिष्ठमहाभटानां
देहोच्छ्रितेन रुधिरेण धरापि रक्ता ॥१०१॥

और बड़े साहस के साथ राजा के सैनिक शेर की तरह अकबर की सेना में जा घुसे और आग के समान चमकते हुए तथा लघु तलवार भी (कमर पर) बाँधे हुए लाखों शत्रुओं के सिपाहियों को धराशायी बना रहे थे ॥९९॥

हल्दी घाटी के युद्ध में विजयेच्छु शूरवीर शत्रु की सेना में घुसकर आग की तरह देदीप्यमान प्राणों की बाजी लगाए युद्ध कर रहे थे। शत्रु दल के साथ युद्ध आश्चर्यजनक था ॥१००॥

युद्ध में हताहत हुए योद्धाओं से हल्दी प्रदेश पर्वतपंक्ति बड़ी विचित्र थी। लड़ाई में मरे योद्धाओं के खून से पृथ्वी लाल हो रही थी ॥१०१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्थं परस्परमभूत् समरोऽतिरौद्रः
साकं प्रतापनृपतेर्यवनैरसंख्यैः ।
विद्धश्च शूलपरिघैर्बहुशोर्णगात्रो
नो विव्यथे नरपतिर्नरसिंहरूपः ॥१०२॥

भिन्नाङ्गकं नरपतिं तुरगः प्रवीणो
निन्ये बहिश्चपलहृक् समरप्रदेशात् ।
यान्तं रणाद् बहिरथो नृपतिं प्रताप-
मन्वद्रवन्नरिजवास्तु जिघांसया हा! ॥१०३॥

राणाप्रतापनपतिं रणतः प्रयान्तं
हन्तुमृधेऽनुसरतो यवनान्निरीक्ष्य ।
भ्राता प्रतापनृपतेर्ननु शक्तिसिंहोऽ
प्यन्वद्रवद् निजसहोदररक्षणाय ॥१०४॥

इस प्रकार राणा का असंख्य मुसलमानों के साथ बड़ा भयंकर युद्ध छिड़ा। शत्रुओं के भालों व बाणों से राणा का शरीर छिन्न-भिन्न था। पर राणा (सिंहरूप हो) घबरा नहीं रहा था ॥१०२॥

छिन्न-भिन्न शरीर राणा को चतुर घोड़ा (चेतक) युद्ध भूमि मे बाहर लेगया और रण से जाते हुए राणा के पीछे शत्रु मारने की इच्छा से भागे ।.१०३॥

और राणा का भाई शक्तिसिंह राणा प्रताप को मारने की भावना से पीछे भागते हुए यवनों को देख अपने भाई की रक्षा के लिए उनके पीछे दौड़ा ॥१०४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शस्त्रैः क्षतं नरपतिं चपलो हयश्च
पृष्ठे नयन् पथि नदीं जलवेगपूर्णाम् ।
उत्प्लुत्य पारमनयद् नृपतिं प्रतापं
तद्यास्तटे प्रपतितो व्यजहादसून् स्वान् ॥१०५॥

पारंगते नरपतौ सरितोऽरयोऽपि
तीर्त्वा नदीमनुययुर्नृपतिं प्रतापम् ।
दृष्ट्वा प्रतापनृपबन्धुमनुव्रजन्तं
स्तब्धा महाभययुता निहता इवासन् ॥१०६॥

वीरं प्रतापनृपतिं बहुशीर्णगात्रं
यान्तं हयेऽनुसरतोऽरिजनान् जघन्यान् ।
भ्राता प्रतापनृपतेर्निजघान मुग्लान्
राणाप्रतापनृतिं ननु हन्तुकामान् ॥१०७॥

चपल चेतक घोड़े ने शस्त्रों से घायल राणा को अपनी पीठ पर बिठा ले जाते हुए (मार्ग में उछलकर जल से पूर्ण नदी से पार कर दिया। परन्तु स्वयं घोड़ा नदी के तट पर गिरने से मर गया ॥१०५॥

राणा के नदी पार होने पर शत्रु भी नदी को पार कर राणा के पीछे-पीछे दौड़े। परन्तु वे पीछे-पीछे आते शक्तिसिंह को देख भयभीत हुए मृतक के समान होगए ॥१०६॥

शक्तिसिंह ने जख्मी हुए वीर प्रताप के पीछे जाते हुए जघन्य शत्रुओं को (जो राणा को मारने के इच्छुक थे) मार डाला ॥१०७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शत्रून्निहत्य बहुतापयुतोऽतिपश्चा-
त्तापं भजन् निजकृते खलु शक्तिसिंहः ।
आलिङ्ग्य बाहुयुगलेन सहोदरं स्व-
मुच्चैःस्वरेण रुदति स्म गतोऽतिलज्जाम् ॥१०८॥

इत्थं चिरेण मिलितौ सुसहोदरौ द्वौ
हा! हन्त! हन्त! रुदताविति तापतप्तौ ।
हा भारतं यवनहस्तगतं विभाव्य
कृत्ये स्वके बहुविधं परिशोचतः स्म ॥१०९॥

भ्रातर्ममैव खलु दुष्कृतिदोषतोऽद्य
हा! हन्त! भारतमही यवनाभिभूता ।
उच्चैःस्वरेण बहु रोदिति रुद्धकण्ठो
भ्रातुः समक्षमिति खिद्यति शक्तिसिंहः ॥११०॥

शत्रुओं को मारकर पश्चात्ताप से संतप्त शक्तिसिंह अपने सहोदर भाई राणा का भुजाओं से आलिङ्गन कर लज्जित हुआ ऊंचे स्वर से रोने लगा ॥१०८॥

इस प्रकार दोनों सहोदर भाई चिरकाल से मिले । तापसंतप्त हुए रोने लगे और भारत देश को यवन हस्तगत जान अपने कृत्यों (किये हुए कर्मों) पर सोचने लगे ॥१०९॥

शक्तिसिंह कहता है भाई मेरे ही दुष्कर्म का फल है, कि भारत भूमि यवनाक्रान्त हो तिरस्कृत हो रही है । इस प्रकार कह करके राणा के सामने रुद्धकण्ठ हो शक्तिसिंह रो पड़ा ॥११०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आस्तामलं ह्यकथया कथया त्विदानीं
शोचन्ति नीतिनिपुणा न गतं कदापि ।
भाव्यं तु यद् न हि कदापि तदन्यथा स्याद्
बन्धुं समाश्वसिति धैर्यधरः प्रतापः ॥१११॥

भास्वानुदेतु यदि पश्चिमदिग्विभागे
मेरुश्चलेद् भवतु शीततमोऽनलश्च ।
चन्द्रो जहातु निजशैत्यगुणं विशिष्टं
भाव्यं तथापि न कदापि तदन्यथा स्यात् ॥११२॥

विद्यालङ्कारेति विशिष्टपदभाजा
श्रीहजारीलालशास्त्रिणा प्रणीते
शिवप्रतापविरुदावलीनामखण्डकाव्ये
नृपप्रतापविजयनाम प्रथमशतकं समाप्तम् ।

(भैया) अब इस अकथनीय कथा को जाने दो। चतुरपुरुष गत बात की चिन्ता नहीं किया करते हैं। होनहार कभी टल नहीं सकती। इस प्रकार धैर्यधारी राणा प्रताप अपने भाई शक्तिसिंह को ढाढस देता है ॥१११॥

चाहे सूर्य पश्चिम दिशा में निकलने लग जावे, स्वर्णमेरु पर्वत चाहे चल पड़े, अग्नि चाहे शीतल हो जाए, चन्द्रमा चाहे अपनी शीतलता छोड़ दे, पर भावी कभी नहीं टल सकती ॥११२॥

स्वर्गीय भूमानन्द शास्त्री प्रभाकर बी० ए० (लेखक के सुपुत्र) द्वारा रचित "शिवप्रतापविरुदावली" प्रथम शतक की हिन्दी टीका समाप्त हुई ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवप्रतापविरुदावली

(शिवराजविजयनाम द्वितीयशतकम्)

प्रणेता—

काव्यकलारचवासु पुरस्कारविजेता

भारतराज्यप्रतिष्ठित पं० श्रीहजारीलालः शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❁ समर्पणम् ❁

यैर्धर्मवीरपुरुषैर्निजदेशहेतो-
स्त्यक्तं समस्तनिजजीवनमार्यवीरैः ।
तेषामहं सविनयं स्मृतिपुण्यतीर्थे
हृद्यं सुपद्यकुसुमाञ्जलिमर्पयामि ॥

जिन धर्मवीर पुरुषों ने अपने देश के लिए अपना समस्त जीवन निछावर कर दिया उनकी स्मृतिरूपी पुण्यतीर्थ में विनय पूर्वक (मैं) यह सुन्दर पद्यरूपी पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूं ।

समर्पक—
लेखक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विष्णुं यं कथयन्ति वैष्णवजनाः शैवास्तु यं शङ्करं
ब्रह्मेति प्रवदन्ति सन्तपुरुषा वेदान्तिनो ज्ञानिनः ।
कर्त्तेति प्रगदन्ति यं नयविदः कर्मेति मीमांसकाः
सर्वाधारविभूतये भगवते तस्मै नमो ब्रह्मणे ॥१॥

वन्दे मुदा हृदि गुरुं सुतपोविभूतिं
सौम्याकृतिं गुणनिधिं कमनीयकान्तिम् ।
श्रीमद्गुरोः करुणया प्रतनोमि काव्यं
नव्यं नृपेन्द्रशिवराजयशोऽभिजुष्टम् ॥२॥

श्रीवीरसिंहशिवराजसमोऽद्य वीरो
भूतो भविष्यति न भारतभूमिभागे ।
यश्चार्यधर्ममथ संस्कृतिमार्यजातेः
प्राणैः पणैः परिररक्ष स पीतकीर्तिः ॥३॥

वैष्णव लोग जिसे विष्णु कहते हैं, शैव जिसे शिव कहते हैं, वेदान्ती ज्ञानी सन्त जिसे ब्रह्म कहते हैं, न्यायवादी जिसे कर्ता मानते हैं, मीमांसक जिसे कर्मरूप में मानते हैं, उस सर्वाधार (परम) विभूति (सर्वव्यापक परब्रह्म) भगवान् को नमस्कार करता हूँ ॥१॥

मैं सहर्ष तपोविभूति, गुण निधि, सौम्यमूर्ति, अपने गुरु जी को (सर्वप्रथम) नमस्कार करता हूं जिनकी कृपा से महाराजा शिवाजी के यश से (ओतप्रोत) इस प्रस्तुत काव्य की रचना करता हूँ ॥२॥

इस भारत भूमि पर वीर पुरुषों में सिंह रूप महाराजा शिवाजी के समान न (अब तक) कोई (वीर पुरुष) हुआ न आगे होगा। जिस यशस्वी वीर ने आर्य धर्म तथा आर्य संस्कृति की प्राणों की बाजी लगाकर रक्षा की ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कः सोऽधमो नरपशुः शिवराजवीरं
जानाति यो न हि नृपं नरसिंहरूपम् ।
यस्याद्भुतामृतमयी प्रियवीरगाथा
सर्वान् पुनाति खलु गाङ्गमिवाम्बु पूता ॥४॥

श्रीविक्रमस्य शतके शुभषोडशान्ते
जातः शिवश्चतुरशीत्यधिके शुभेऽब्दे ।
श्रीशाहमित्रभवने शिवनेरिदुर्गे
दुर्गो ह्यसौ गिरिसमोऽस्ति महासुराष्ट्रे ॥५॥

देवोपमं शिवमसूत शिवं सुमाता
'जीजा'ऽऽयं देशमहिलाग्निमिवारणिः स्वम् ।
श्रीशाहजी स्वसुतजन्ममहोत्सवं च
विप्रान् समर्च्य विधिना विधिना चकार ॥६॥

ऐसा कौन अधम नरपशु होगा जो नरसिंह वीर शिवाजी को नहीं जानता हो। जिसकी अद्भुत अमृतमयी वीरकथा (गंगा जल के समान पवित्र) समस्तजनों को पवित्र करती है ॥४॥

शिवाजी विक्रमीय १७वीं शताब्दी में ८४वें वर्ष (१६८४) में शिवनेरी किले में (श्री शाहमित्र के भवन में) उत्पन्न हुए। जो किला महाराष्ट्र प्रदेश में पर्वत के समान सुदृढ़ था ॥५॥

सुमाता जीजा राणी ने स्वयं जिस प्रकार अरणी (समिधा) अग्नि को पैदा करती है उसी भान्ति देवतुल्य शिवाजी पुत्र को पैदा किया और श्री शाह जी ने पुत्र का जन्मोत्सव विधिपूर्वक ब्राह्मणों की पूजा कर विधिपूर्वक किया। ६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा मुदा बहुविधैरमृतोपमानै-
र्भोज्यैरतीव मधुरैर्हविषान्नपानैः ।
संतर्पयन् द्विजगणान् सहृदक्षिणाभिः
संमानयन् सुनितरां शुशुभे यशस्वी ॥७॥

राज्ञी स्वपुत्रशुभजन्ममहोत्सवे तु
हर्षप्रकर्षभरिता मुदिता द्विजेभ्यः ।
प्रादादवर्घ्यमणिरत्नसुभूषणानि
सन्मङ्गलस्य नितरां शुभसूचकानि ॥८॥

जातो मदीयतनयः 'शिवनेरि'दुर्गे
देव्या सदैव शिवयाधिकृते ह्यभेद्ये ।
तेन स्वपुत्रशुभनाम शिवेति जीजा
देवी शिवासुसदृशं शिवदं व्यधत्त ॥९॥

यशस्वी राजा शाह जी अमृततुल्य मधुर अनेक प्रकार के हवि (घृत) से बने अन्न के भोज्य पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन द्वारा तृप्त कर विपुल दक्षिणाएं देकर ब्राह्मणों को सम्मानित करता हुआ शोभित हो रहा था ॥७॥

और राणी (जीजा बाई) ने अपने पुत्र के शुभ जन्मोत्सव पर परम मुदित हो ब्राह्मणों को अनेक मणि रत्न आभूषण प्रदान किए जो सम्मान के सूचक थे ॥८॥

मेरा पुत्र शिवनेरि दुर्ग में पैदा हुआ । जो किला सदा से शिवा देवी से अधिकृत होने से अभेद्य था । अतः जीजा बाई ने अपने पुत्र का नाम शिवा देवी के अनुरूप शिवाजी रख दिया ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यं तु कारणगुणाः स्वयमाश्रयन्ते
सत्यं ब्रुवन्ति विबुधा न मुदा वदन्ति ।
बाल्ये शिवः स्वपितृमातृगुणानुरूपः
सर्वत्र तत्र गुणगौरवभाजनोऽभूत् ॥१०॥

'श्रीमालुजीति' शिवराजपितामहेन
बाल्ये शिवोऽश्वसुकलाकुशलो ह्यकारि ।
शस्त्रादिचालनविधावपि शिक्षितश्च
राज्ञां सुनीतिनिपुणोऽग्रगणी बभूव ॥११॥

वीरो महाद्भुतभटो महतां वरिष्ठः
श्रेष्ठः सतां क्षितिभुजां बलिनां बलिष्ठः ।
ज्येष्ठो बलिष्ठपुरुषेषु सुधीर आर्यः
कीर्त्या सदा विजयते शिवराजवीरः ॥१२॥

कारण के गुण कार्य में स्वयं आ जाते हैं। यह विद्वान् सत्य कहते हैं, व्यर्थ नहीं कहते। शिवाजी बचपन में अपने माता-पिता के अनुरूप सर्वत्र गुणों का पात्र बन गया ॥१०॥

शिवाजी के पितामह श्री मालु जी ने बचपन में ही शिवाजी को अश्वचालन कला में कुशल कर दिया और अस्त्र शस्त्र चालन कला में भी दक्ष कर दिया। शिवाजी राजनीति में भी अग्रगण्य हो गया ॥११॥

वीर महान् योद्धा, महान् पुरुषों में श्रेष्ठ, राजाओं में बलवान्, बलवान् पुरुषों में सबसे बड़ा धीर आर्यवीर शिवाजी अपनी कीर्ति से अमर है ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्ञा शिवेन बहुशोऽधिकृतानि दुर्गा-
ण्यार्येण नीतिनिपुणेन विजित्य शत्रून् ।
दिल्लीश्वरो यवनराडवरङ्गजेबः
कर्त्तव्यमूढ इव चाप विशेषचिन्ताम् ॥१३॥

सर्वत्र तत्र शिवराज्ञि सुशासतीति
मुग्लास्तदा भरतभूपतयः प्रतापम् ।
नो सेहिरे शिवनृपस्य यशोविवृद्धं
नीचाः परोन्नतिमुदीक्ष्य भवन्त्यधीराः ॥१४॥

राज्ञः शिवस्य यशसोऽभिततस्य तेजो-
वृद्ध्याऽभवंश्च यवना विकला इवान्धाः ।
म्लानोन्मुखा भययुताः प्रभया विहीनाः
सूर्योदये भवति चान्ध उलूकवर्गः ॥१५॥

राजनीति निपुण आर्य वीर शिवाजी ने शत्रुओं को जीतकर बहुत से किलों पर अपना अधिकार कर लिया और किंकर्त्तव्यविमूढ़ दिल्लीश्वर औरंगजेब अत्यन्त चिन्तातुर होगया ।।१३।।

राजा शिवा के शासक होने पर भारतीय यवन राजा शिवाजी के फैले हुए यश को न सह सके । ठीक है नीच पुरुष दूसरों की उन्नति को देख अधीर हो जाया करते हैं (यह स्वाभाविक बात है) ।।१४।।

राजा शिवाजी के अत्यधिक यश रूपी तेज की वृद्धि से यवन लोग अन्धों की तरह विकल हो उठे और भयभीत म्लान मुख कान्तिहीन हो गए । ठीक है सूर्योदय होने पर उल्लू पक्षी अन्धा हो जाता है ।।१५।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"औरङ्गजेबनृपते"श्छलनीतिवश्यो
नाभूच्च यो धृतनिशातशिवास्त्रहस्तः ।
सिंहेन तुल्यमथ यस्य तु दृष्टिपातो
धन्यः स वीरपुरुषः शिवराजवीरः ॥१६॥

सद्धर्मसेतुरभवद् नृपनीतिदक्षो
धैर्ये तु यो हिमगिरिः समुदात्तवृत्तः ।
यो भारतीयकुलसंस्कृतिमेरुदण्डो
वीरोऽमरः स जयतात् शिवराजवीरः ॥१७॥

"औरङ्गजेब"नृपतेः कुमतेह्यसाधो-
र्दुर्नीतिपाशवशगां शतधा विछिन्नाम् ।
हिन्दुत्वसंस्कृतिमथार्यसुसभ्यतां यः
संरक्षति स्म स शिवो मनसाभिनन्द्यः ॥१८॥

और शिवाजी पैना त्रिशूल हाथ में लिए औरंगजेब की कपट-नीति के वश में नहीं हुआ। उस वीर पुरुष शिवराज को धन्य है ॥१६॥

जो शिवाजी सद्धर्म का सेतु था, नीतिदक्ष था, धैर्य में हिमालय के तुल्य था, सच्चरित्र था, भारतीय परम्परागत संस्कृति का सुमेरु दण्ड था, वह शिवाजी सदा से विजयी व अमर है ॥१७॥

जिस वीर शिवा ने असाधु कुमति राजा औरंगजेब की कुनीति पाश के वशीभूत अतएव छिन्न भिन्न हिन्दु संस्कृति व सभ्यता की रक्षा की। वह वीर शिवाजी सदा श्लाघनीय है ॥१८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"औरङ्गजेब"नृपतिः शिवराजभीतो
रात्रिंदिवं न लभते स्म सुखेन निद्राम् ।
स्वप्नेऽप्यसौ नृपशिवं धृतशूलहस्तं
दृष्ट्वा महाभययुतः पतति स्म तल्पात् ॥१९॥

किं वर्णयामि शिवराजनृपस्य गाथां
दिव्यां सुधारसभरां हृदयाभिरामाम् ।
श्रुत्वा तु यां हृदि भटा मुदमभ्युपेयु-
र्भीतास्त्वघोरपुरुषा व्यथिता भवेयुः ॥२०॥

राजैकदा तु यवनः शिवराजवीर-
माहूतवान् स्वभवने कपटाभ्युपेतः ।
आगत्य तत्र शिवराज उपायनानि
ह्यौरङ्गजेबविहितानि जहौ सगर्वम् ॥२१॥

राजा औरंगजेब शिवाजी से भयभीत हुआ दिन रात सुख से नीन्द नहीं पाता था और वह स्वप्न में त्रिशूलधारी शिवाजी को देख भयभीत हुआ तल्प (चारपाई) से नीचे गिर पड़ता था ॥१९॥

अमृतमयी, हृदय को प्यारी, राजा शिवाजी की दिव्य कथा का क्या वर्णन करूं । जिसे सुनकर वीर पुरुष आनन्दित होते हैं। कायर पुरुष जिसे सुन भयभीत हो पीड़ित हो उठते हैं ।२०॥

एक बार राजा औरंगजेब ने कपट से शिवाजी को बुलाया और शिवराज ने आकर औरंगजेब से दी गई उपायन वस्तुएं गर्व से ठुकरा दी ॥२१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वाट्टहासमशिवं शिवराजवीर-
श्चौरङ्गजेबनृपतिं भयभीतमूचे ।
रे दुष्ट! पामर! महाधम! पापवृत्ते!
नेच्छामि गर्ह्यमिदमद्य तवोपहारम् ॥२२॥

त्वं कोऽसि राज्यमिदमस्ति विभूतिरस्त्वं
सर्वं धरातलमिदं तु मदीयमस्ति ।
त्यक्त्वाऽद्य भारतमहीं झटिति प्रयाहि
नोचेद् विनंक्ष्यसि शिवेति जगाद वीरः ॥२३॥

उक्त्वेति धीरपुरुषः शिवराजवीर-
स्त्यक्त्वाऽऽशु राजसदनं सहसा जगाम ।
"औरङ्जेब"नृपतिस्तु भयाभिभूतो
म्लानोन्मुखः शिवबधाय कृतोद्यमोऽभूत् ॥२४॥

और वीर शिवाजी अट्टहास करते हुए भयभीत औरंगजेब से बोला । रे पामर दुष्ट महाधम पापी ! तेरे इस निन्दनीय उपहार को मैं नहीं लेना चाहता ॥२२॥

रे तू कौन है ? यह सब राज्य विभूति मेरी है और यह समस्त पृथ्वी मण्डल मेरा है । तू शीघ्र अब इस भारत भूमि को छोड़ चला जा, अन्यथा मारा जाएगा । इस प्रकार वीर शिवाजी बोला ॥२३॥

इस प्रकार कहकर धीर वीर शिवाजी राजभवन को छोड़ एकदम चला गया । भयभीतमुख कान्तिहीन औरंगजेब शिवाजी के वध हेतु प्रयत्नशील होने लगा ॥२४।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वत्र दिक्षु शिवराजवधाय दूतान्
गुप्तान् स राजपुरुषांश्च समादिदेश ।
दूतास्तु गुप्तविधिभिर्विविधैर्न शेकु-
र्हन्तुं सुधीरपुरुषं शिवराजवीरम् ॥२५॥

धृत्वा करालपरिघं शिवराजवीरो
ह्यारुह्य चाश्वमथ दिग्विजये प्रतस्थे
दुर्गाणि वैभवयुतानि विजित्य शक्त्या ।
राज्यं स्वकं दृढ़तमं कुरुते स्म धीरः ॥२६॥

श्रुत्वैकदा जनमुखात् शिवराजवीरो
बोभूयमानमथ गोवधमिन्द्रपुर्याम् ।
आदाय घोरपरिघं त्वहिकालरूपं
गत्वाऽऽशु तत्र निजघान खलांस्त्वसंख्यान् ॥२७॥

और शिवाजी का वध करने के लिए (औरङ्गजेब ने) सब दिशाओं में गुप्त राजदूतों को भेजने की आज्ञा दे दी । गुप्तचर अनेक विधियों से धीर वीर शिवाजी को मारने में सफल न हो सके ॥२५॥

वीर शिवाजी तेज धार तलवार को हाथ में ले और घोड़े पर चढ़कर दिग्विजय के लिए चल पड़ा । अपनी शक्ति से अनेक वैभवयुक्त किलों को जीत लिया और अपने राज्य को सुदृढ़ बना लिया ॥२६॥

एक बार शिवाजी ने दिल्ली में गोवध होता है यह बात लोगों के मुख से सुन सर्प के समान कालरूप भयंकर तलवार को ले, दिल्ली में जाकर अनेक गोवध करते हुए) यवनों को मौत के घाट उतार दिया ॥२७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञात्वेति वीरशिवराजकृत ह्यकार्यं
दिल्लीश्वरोऽनयरतः परितप्यमानः ।
कर्त्तव्यमूढमतिरार्यशिवं निहन्तुं
शोचन् दिवानिशमसौ बहुचिन्तितोऽभूत् ।। २८।।

हा ! हा ! लपन्त''मफजल्ल'' सुहृत्तु तस्य
दृष्ट्वा नृपं शिवकृपाणभयादशान्तम् ।
संदर्शनार्थमभितो निजराजभक्तिं
हन्तुं शिवं कपटवेशधरो ह्यगच्छत् ।।२९।।

रक्ताधरं मदविघूर्णितनेत्रयुग्मं
चान्तर्विष कनककुम्भमिवोज्ज्वलन्तम् ।
दूराद् ददर्श यवनं यवनाधिराजं
साक्षाद् यमेन सदृशं शिवराजवीरः ।।३०::

दिल्लीश्वर शिवाजी से की गई मारधाड़ को जान अनीतिज्ञ सन्तप्तहृदय किंकर्त्तव्यमूढ़ शिवाजी को मारने के लिए रात दिन सोचने लगा ।।२८।।

राजा (औरङ्गजेब) का परम सुहृत् अफजलखां हाय ! हाय ! विलाप करते हुए, शिवाजी की तलवार से भयभीत राजा औरङ्गजेब के आगे अपनी राजभक्ति दिखाने के लिए कपटवेश बना शिवाजी को मारने के लिए चल पड़ा ।।२९।।

शिवाजी ने लाल जिसका अधर है, मद से पूर्ण जिसके नेत्र हैं, विष भरे सोने के घड़े के समान जो चमक रहा था, ऐसे उस यवनराज अफजलखां को साक्षात् यमराज के समान देखा ।।३०।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैवोऽपि साहसबलेन बलेन सार्धं
सज्जो दधार दृढसिंहनखं सुगुप्तम् ।
आयान्त"मफ्जल"वरस्य वरं च दूतं
दृष्ट्वा तमाह कथमद्य समागतोऽसि ॥३१॥

दूतोऽपि नीतिनिपुणः शिरसाभिवन्द्य
शैवं नृपं सविनयं प्रतिवक्तुमूचे ।
राजन् ! त्वया सह विधातुमनाः सुसन्धि-
माया"त्यफज्जल"महान् तव दर्शनार्थम् ॥३२॥

सन्धिं विधातुमफजल्लमहानुभाव-
मायान्तमार्यपुरुषः शिवराजवीरः ।
दृष्ट्वाऽऽसनादिकमदाद् बहुमानपूर्व-
मातिथ्यमार्यविधिना विदधे विधिज्ञः ॥३३॥

शिवाजी भी बड़े साहस से दृढ़ सिंहनख (बघनखा) गुप्त रूप से धारण कर तैयार होगया और (सामने आते हुए) अफजलखां के दूत को देखा और कहा श्रीमान् जी(जनाब)कैसे आना हुआ ॥३१॥

नीतिज्ञ दूत झुककर सलाम कर शिवाजी से सविनय बोला ! हे राजन् ! अफजलखाँ महोदय सन्धि करने की इच्छा से आपके दर्शनार्थ आ रहा है ॥३२॥

आर्यपुरुष शिवराज ने सन्धि करने के लिए आए हुए श्री अफजल खान को देखकर सम्मानपूर्वक उसे आसन दिया और विधिपूर्वक उसका अतिथि सत्कार किया ॥३३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्मानयन्ति सुजना विविधोपहारै-
र्गेहागतं रिपुजन ह्यपि मानपूर्वम् ।
किन्तूद्धत: खलजनो बहुसत्कृतोऽपि
जह्यान्न निम्बतरुवत् स्वकटुत्ववृत्तिम् ॥३४॥

सम्मानमाप्य शिवराजकृत स धूर्तो
हन्तुं शिवं हतमतिः कुमतिं दधार ।
उत्थाय गाढमुरसा शिवराजवक्ष-
श्चालिङ्गितुं करयुगं विततं चकार ॥३५॥

निष्पीड्य बाहुयुगलेन शिवस्य वक्षो
गाढं ममर्द स खलः शिवराजवीरम् ।
ध्यात्वा गुरुं हृदि शिवस्तमसत्तमान्धं
क्रुद्धो मृगेन्द्र इव सिंहनखैर्ददार ॥३६॥

सज्जन पुरुष घर में आए हुए शत्रुजन का भी अनेक उपहारों से सम्मान करते हैं। किन्तु दुष्ट असज्जन पुरुष बहुत सत्कार पाकर भी नीम के वृक्ष की भांति अपने कटु स्वभाव को नहीं छोड़ता ॥३४॥

वह धूर्त्त (अफजल खां) शिवाजी से आतिथ्य सम्मान पाकर शिवाजी को मारने के लिए कुबुद्धिग्रस्त होगया और उठकर अपनी छाती से वीर शिवाजी की छाती का खूब आलिङ्गन करने के लिए दोनों हाथों को फैलाया ॥३५॥

वह दुष्ट शिवाजी की छाती को अपनी बाहुओं से खूब दबाकर मर्दन करने लगा। और महाराज शिवाजी ने हृदय में अपने गुरु का ध्यान धर उस असत्तम अन्धे को क्रोधित सिंह की तरह अपने पहने हुए बघनखे से फाड़ डाला ॥३६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैवोऽवरङ्गनृपतेः परमं सुमित्र
शैवं जिघित्सुमसिना धृतकौक्षिकेयम् ।
आलिङ्ग्यमानमफल्लमथो जघान
धन्यः स लोहपुरुषः शिवराजवीरः ॥३७॥

यत्ने कृतेऽपि बहुले स हताश आसीद्
दिल्लीपतिर्हतमतिर्निजकार्यसिद्धौ ।
चान्ते शिवस्य जनके निजमन्त्रिवर्ये
श्रीशाहजीसुपुरुषे कुमतिं चकार ॥३८॥

श्री "शाहजी" सुपुरुषं विनयस्य मूर्तिं
वन्दीचकार हतधी"रवरङ्गजेबः" ।
प्रायो विपत्तिसमये महतां मनांसि
दुःसंगपङ्कमलदोषमनुव्रजन्ति ॥३९॥

शिवाजी ने औरंगजेब के परम मित्र जो छुरी धारण किए हुए था और शिवाजी को तलवार से मारना चाहता था. आलिङ्गन करते उस दुष्ट अफजलखान को मौत के घाट उतार दिया। लोह पुरुष वीर शिवाजी को धन्य है ॥ ३७ ॥

दिल्लीपति हतबुद्धि औरंगजेब अपनी कार्यसिद्धि में प्रयत्न करने पर भी हताश हो गया। अन्त में अपने राजमन्त्री शिवाजी के पिता सत्पुरुष श्री शाहजी में अनेक कुत्सित विचार करने लगा । ३८ ॥

हतबुद्धि औरंगजेब ने विनय की मूर्ति सत्पुरुष श्री शाहजी को कैद में डाल दिया। ठीक है प्राय विपत्ति में महान् पुरुषों के मन भी कुसंग रूपी पंक से मैले हो जाते हैं ॥ ३९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञात्वा शिवः स्वपितरं नृपबन्धनस्थं
सद्योऽवरङ्गनृपतेर्भवनं जगाम ।
राजाऽऽगतं नृपशिवं सुविलोक्य दूरात्
सम्बध्यतामिति शिवं दिशति स्म भृत्यान् ॥४०॥

राज्ञो निदेशवशगा नृपकिंकराश्च
वीरं शिवं सुनिगडैः परितो बबन्धुः ।
कारागृहे नृपशिवं विनिपात्य भृत्या
राजाज्ञयाऽथ मुमुचुः शिवराजतातम् ॥४१॥

"श्रीशाहजी" सुपुरुषो हि महानुभाव-
स्त्यक्त्वा स्वशिष्टपदमाशु गतः स्वगेहे ।
वीरः शिवः स्वजनकं परिभाव्य मुक्तं
वन्दीगृहस्य परितापममंस्त चाल्पम् ॥४२॥

शिवाजी अपने पिता को राजा का बन्दी जानकर औरंगजेब के भवन में पहुँचा और औरंगजेब ने दूर से शिवाजी को आते देख शिवाजी को पकड़ो २ यह नौकरों को आज्ञा दी ॥४० ॥

राजा की आज्ञा में बन्धे हुए राजकिंकरों ने वीर शिवाजी को निगडों (हथकड़ियों) से चारों तरफ से बांध दिया और नौकरों ने राजा शिवाजी को कारागार में डाल दिया। फिर राजा की आज्ञा से शिवाजी के पिता को छोड़ दिया ॥ ४१ ॥

सत्पुरुष महानुभाव श्री शाहजी नें अपना विशिष्ट पद छोड़ दिया और अपने घर चला गया। वीर शिवाजी ने अपने पिता को मुक्त जान बन्दीघर के दुःख को किंचित् मात्र भी नहीं समझा ॥ ४२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वापि वन्दिनमहो ! शिवराजवीरं
दिल्लीश्वरो गतभयो न तथापि भूतः ।
चिन्ताचिताञ्चितवपुः शिवराजभीतो
दैनन्दिनं बहुविधं परिशङ्कते स्म ॥४३॥

वीरः शिवोऽतिसुलभं समयं समीक्ष्य
बन्दीगृहात् स्वकलयाशु विनिर्गतोऽभूत् ।
"औरङ्गजेब"नृपतिस्तु गतः शिवो हा !
ज्ञात्वा विषण्णवदनो विललाप भूरि ॥४४॥

भूपाज्ञया विविधवेशधराः सुवीरा
अन्वेषणाय दशदिक्षु शिवं प्रयाताः ।
पृष्टानुगान् समवलोक्य शिवोऽसिपाणिः
शत्रून् जघान शतशो धृतशूलहस्तान् ॥४५॥

दिल्लीश्वर वीर शिवाजी को कैद में पड़ा जानकर भी निर्भय नहीं हुआ। शिवाजी से भयभीत राजा रातदिन चिता चिन्ता में जलता हुआ बहुत प्रकार से शङ्कितमन रहता था ॥ ४३ ॥

वीर शिवाजी अतिसुलभ समय समझ अपनी चतुराई से बन्दी-घर से निकल गया। और औरंगजेब हाय २ शिवाजी चला गया नष्टकान्ति हुआ बहुत प्रकार से विलाप करने लगा ॥ ४४ ॥

राजा की आज्ञा पा अनेक (कुफिया) वेश बनायें बड़े २ वीर शिवाजी को ढूंढने को चल पड़े। और हाथ में तलवार खींचे हुए वीर शिवाजी ने पीछे २ सैंकड़ों आने वाले शत्रुओं को देख (जिन के हाथ में भाले थे) उन्हें मौत के घाट उतार दिया ॥ ४५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्थं मृगेन्द्र इव मन्युमपेयिवांश्च
वीरः शिवोऽतिभयदं परिघ दधानः ।
सन्तापयन्नरिदल विचचार धीरो
रात्रौ दिवा च गिरिगह्वरकन्दरासु ॥४६॥

"जीजा"सुतोऽग्निरिव दीप्तियुतोऽप्युदारः
सिंहोपमां वपुषि साहसतामुपेतः ।
रौद्रीं तनुं परिदधद् धृतशूलपाणि-
र्दस्योर्दलेन सह संयुयुधे रणेषु ॥४७॥

स्वीयेन साहसबलेन विजित्य दुर्गा-
ण्यादाय बाहुबलतो द्विषतां विभूतीः ।
राज्यं स्वकं च खलु दक्षिणभारतेऽसौ
कर्तुं शशाक सुदृढं शिवराजवीरः ॥४८॥

इस प्रकार सिंह की भान्ति क्रोधित हुआ भयङ्कर खड्ग लिए वीर शिवाजी शत्रुदल को तपाता हुआ रात दिन पहाड़ों की अन्धकारमयी गुफाओं में घूमता था ॥ ४६ ॥

जीजाबाई का पुत्र अग्नि की तरह चमकता हुआ उदार वीर शिवाजी सिंह की उपमा को प्राप्त हुआ अपना भयङ्कर रूप बना त्रिशूल हाथ में लिए शत्रु दल के साथ अनेक युद्धों में भिड़ता था ॥४७॥

और वीर शिवाजी ने अपने साहस बल से अनेक किले जीत कर और शत्रुओं की संपत्तियां छीनकर दक्षिण भारत में अपनी राज्यसत्ता को दृढ़ बना लिया ॥ ४८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रुत्वाऽऽगतो नृपशिवो ह्यरयोऽतिभीता
हित्वा गृहान् गिरिगुहासु गताः सकान्ताः ।
कन्दैः फलैर्वनभवैरुदरं प्रपूर्य
निन्युर्दिनानि शिवराजमृगेन्द्रभीताः ॥४९॥

नार्यस्तु या विविधभोगरताः सकान्ता
हर्म्येष्ववात्सुरनिशं द्विषतां स्मितास्याः ।
नासंश्च ताः सुनितरां शिवराजभीता
रात्रिं दिवं गिरिगुहां तु विहातुकामाः॥५०॥

कान्ताश्च या यवनवंशभवाः सगर्वा
रत्नादिभूषणसुभारनता बभूवुः ।
ता ह्यार्यवीरशिवराजभयाभिभूता
आसन् नतास्त्वधिवन क्षुधिता भ्रमन्त्यः॥५१॥

वीर शिवाजी आगया यह सुन शत्रु लोग भयभीत हुए अपने घरों को छोड़ अपनी स्त्रियों को साथ ले पहाड़ों की गुफाओं में जा छिपे। और शिवराज सिंह से भयभीत शत्रु लोग वन के कन्द मूल खाकर (पेट भर) दिन बिताते थे ॥ ४९ ॥

जो शत्रुओं की स्त्रियां रात दिन महलों में बैठी हंसती हुई अनेक पदार्थ खाती थीं वे शिवाजी से भयभीत दिन रात पहाड़ों की गुफाओं को छोड़ना नहीं चाहती ॥ ५० ॥

यवन वंश में पैदा हुई बड़ी मरोड़ रखनेवाली अनेक रत्नाभरणों के भार से झुकी हुई जो स्त्रियां थीं वे आर्यवीर शिवाजी के भय से वन २ मारी-मारी भटकती फिरती हैं और अत्यन्त कृश होकर झुक गई हैं ॥ ५१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हर्म्येषु यास्तु नवनीतसुकोमलाङ्ग्यः
शय्यासु कान्तसहिताः सुषुपुर्यवन्यः ।
त्यक्त्वा गृहाणि वनिताः शिवभीतितस्ता
वन्यस्थलीषु विषमासु च शेरते स्म ॥५२॥

याः काश्च काञ्चनसुभूषणभूषिताङ्ग्यः
संभुञ्जते स्म भवनेषु सुखेन भोगान् ।
नग्नाश्च ताः शिवभिया विपिनेष्ववसीदन्
शीतार्दिता यवनजा वनिताः क्षुधार्ताः ॥५३॥

इत्थं शिवस्य नृपतेर्दशदिक्षु दीप्तं
सर्वत्र भारतभुवि प्रससार तेजः ।
यत्तेजसा च कुधियो द्विषतो बभूवु-
रन्धा उलूकसदृशा शममीयुरार्याः ॥५४॥

जो मुसलमानियां मक्खन से कोमल शरीर वाली महलों में अपने पतियों के साथ सेजों पर सोती थीं वे आज अपने घरों को छोड़ वीर शिवाजी के भय से ऊंची नीची वन भूमियों में सो रही हैं। ५२॥

और जो सोने के जेवरों से चमकती हुई (शत्रु स्त्रियां) महलों में अनेक भोग भोगती थीं वे शिवाजी के भय से नग्न, जाड़े से कांपती, भूखी प्यासी महा दुःखी हो रही थी ॥ ५३ ।

इस प्रकार महाराजा शिवाजी का प्रताप भारत में दश दिशाओं में फैल गया। जिस तेज से कुबुद्धि शत्रु लोग उल्लुओं के समान अन्धे होगए। आर्यपुरुषों को शान्ति मिली ॥ ५४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"औरङ्गजेब"नृपतिर्न शिवो बभूव
वश्यो ममेति किमु हा ! नृपजीवनं मे ।
हा! धिक् च मां च मम वैभवशालितां वा
चक्रन्द चेत्थमथ भूपतिरार्त्तकण्ठः ।।५५।।

"औरंगजेब"नृपतिः शिवबन्धनार्थं
शाइस्तखें"ति निजमातुलमादिदेश ।
"शाइस्तखां" तु बहुसैन्यदलेन सार्धं
योद्धुं सुधीरशिवराजमुखी बभूव ।।५६।।

पूनेति नामनगरीं शिवराजधानीं
"शाइस्तखां" बलयुतः परितो रुरोध ।
ज्ञात्वा पुरीमरिगणैरभितोऽवरुद्धां
शैवोऽपि योद्धुमरिभिः पुरतो जगाम ।।५७।।

औरंगजेब (राजा) शिवाजी मेरे वश में नहीं हुआ । हाय ! ऐसे मेरे जीवन से क्या ! हाय ! मुझे धिक्कार है, और मेरी वैभवशालिता को धिक्कार है । इस प्रकार राजा रुद्धकण्ठ से विलाप करने लगा ।। ५५ ।।

राजा औरंगजेब ने शिवाजी को पकड़ने के लिए अपने मामा 'शाइस्ताखाँ" को (बड़ी भारी सेना दे) आज्ञा दी । और "शाइस्ता खाँ" युद्ध करने के लिए धीर वीर शिवाजी से जा भिड़ा ।। ५६ ।।

और शाइस्ताखाँ ने (बड़ी भारी सेना ले) जहाँ शिवाजी की राजधानी थी ऐसी पूना नाम नगरी को चारों ओर से जा घेरा । शत्रुओं से चारों तरफ घिरी नगरी को जान वीर शिवाजी भी शत्रुओं से युद्ध करने के लिए नगर से बाहर निकला ।। ५७ ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धृत्वा सुसाहसमथो शिवराजवीरो
नानायुधैः परिवृतस्तुरगाधिरूढः ।
सिंहो यथा मृगगणं च तथा ह्यरातेः
सेनां क्षणेन महतीं कवलीचकार ॥५८॥

"शाइस्तखानयवनस्य तु युद्धभूमौ
सेना शिवस्य परिघेण हता विनष्टा ।
शेषा महाभययुता दशदिक्षु याता
किं वर्णयामि शिवराजसुयुद्धदाक्ष्यम् ।५९।

पृष्ठानुगैः कतिपयैः प्रियसैनिकैश्च
संरक्ष्यमाण इभराडिव दीप्यमानः ।
वीरः शिवो गतभयो धृतशूलहस्तो
युद्धाङ्गणे सुशुशुभे मृगराडिवाढ्यः ।।६०।।

फिर बड़ा साहस धारण कर घोड़े पर चढा, हथियारों से युक्त वीर शिवाजी जैसे शेर मृगों को ग्रास बनाता है, उसी प्रकार भारी शत्रु सेना को ग्रास बनाने लगा ॥ ५८ ॥

यवनराज शाइस्ताखाँ की सेना युद्धभूमि में शिवाजी की तलवार से छिन्नभिन्न हो नष्ट होगई । और शेष बची सेना दश दिशाओं में भाग निकली । वीर शिवाजी की युद्ध चतुराई का क्या वर्णन करूं ॥ ५९ ॥

पीछे चलने वाले कुछ सैनिकों के साथ सुरक्षित ऐरावत हाथी की तरह देदीप्यमान त्रिशूलधारी वीर शिवाजी युद्धभूमि के आँगन में शेर की तरह शोभित हो दहाड़ रहा था ॥ ६० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"जीजा"सुतस्य भयदेन भयङ्करेण
खड्गेन वीरपुरुषैस्तु हतैः सहस्रैः ।
मुण्डैश्च शोणितमयैर्वसुधा समस्ता
सर्वत्र शोणितमयी परिदृश्यते स्म ॥६१॥

कृत्वोच्चगर्जनमसौ शिवराजसिंहः
शाइस्तखानसुभटांस्तु वृकोपमेयान् ।
युद्धेऽबधीत् कृतकरालमुखः सुकेशी
शेषास्तु वीरशिवराजभयादधावन् ॥६२॥

केचिद्विनिकृत्तवदनाः पतिता धरायां
केचिद्रणाङ्गणमपास्य गता ह्यदृश्यम् ।
इत्थं शिवस्य नृपतेर्विजयातिघोषः
सर्वत्र तत्र भुवने प्रससार सद्यः ॥६३॥

शिवाजी के भयङ्कर खड्ग से हजारों मरे हुए बहादुरों व खून से रंगे हुए हजारों शिरमुण्डों से समस्त पृथ्वी सब जगह खून से रंगी हुई दिखाई पड़ रही थी । ६१ ॥

वीर शिवराजसिंह ने उच्चगर्जना से भेड़ियों के समान शाइस्ताखाँ के योद्धाओं को मार गिराया कुछ बचे हुए शिवाजी के भय से भाग गए । शिवाजी का मुख उस समय बड़ा देदीप्यमान था । सुन्दर केश थे ॥ ६२ ॥

कुछ योद्धा जिनके मुख कट गए पृथ्वी पर जा पड़े । कुछ युद्ध-भूमि को छोड़ अदृश्य हो गए । इस प्रकार शिवाजी का विजयघोष सर्वत्र भूमण्डल पर तत्काल फैल गया ॥ ६३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चम्वां शिवस्य धृतकार्मुकखड्गशूलाः
सेनाधिपा हयगजेष्वधिरुह्य वीराः ।
धृत्वाऽऽशु साहसमहो ! यवनीयसेनां
पूनेति नामनगरे शतधा निजघ्नुः ॥६४॥

शाइस्तखानतनयं शिवराजवीरो
योयुध्यमानमबधोदसिनातिरुष्टः ।
शाइस्तखानमपि तीव्रपरश्वधेन
हन्तुं शिवः प्रकुपितश्च कृतोद्यमोऽभूत् ॥६५॥

हा हा !लपन्तमथ तं यवनाधिराजं
मा मा जहीति सततं प्रलपन्तमार्तम् ।
शैवो दयार्द्रहृदयो न जघान दीनं
मत्वाऽबला हतसुता विधवेति मा भूत् ॥६६॥

शिवाजी की सेना के सिपाहियों ने हाथी घोड़ों पर चढ़ बड़ा साहस प्राप्त किया और पूना नगर में यवन सेना को तीतर-बीतर कर डाला ॥ ६४ ॥

अतिरुष्ट हुए वीर शिवाजी ने तलवार से युद्ध करते हुए शाइस्ताख़ाँ के पुत्र को मार दिया और कुछ क्रुद्ध हो शिवाजी तेज-धार बर्छे से शाहस्ताखाँ को भी मारने के लिए तैयार हो उठे ॥६५ ॥

फिर मुझे मत मारो लगातार प्रलाप करते हुए दुःखी दीन (पुत्र मारे जाने से) शाइस्ताखाँ को दया से पिंघले हुए शिवाजी ने हतपुत्र इसकी स्त्री विधवा न हो यह समझ छोड़ दिया ॥ ६६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्थं शिवस्य समरे जयघोषनादं
श्रुत्वारयो दशदिशासु गता बिभीताः ।
राजा शिवो विजयहर्षभरोऽतिहृष्टो
राज्यप्रबन्धमकरोद् नृपनीतिदक्षः ॥६७॥

"पूने"ति नामनगरे नयनाभिरामे
वीरः शिवः समकरोद् निजराजधानीम् ।
शासन् प्रजां नयपुरःसरमार्यदेशे
कुर्वन् प्रजासु समतां कुरुते स्म राज्यम् ॥६८॥

भूपे शिवे नयरते बहुविश्रुते च
संशासति स्वजनतां प्रियभारतेऽस्मिन् ।
सर्वत्र शान्तिरभवद् न तु भीतिरीतेः
स्वर्गायते स्म खलु भारतभूमिखण्डम् ॥६९॥

इसप्रकार युद्ध में शिवाजी का जयघोष (नारा) सुनकर शत्रु लोग दश दिशाओं में भाग गए फिर विजय से हर्षित राजा शिवाजी ने (जो बड़ा नीतिकुशल था) साथ २ समस्त राज्य का प्रबन्ध कर दिया ॥ ६७ ॥

और वीरशिवाजी ने रमणीय पूना नामक नगर में अपनी राजधानी स्थापित कर दी । इसप्रकार नीतिपूर्वक शिवाजी आर्यदेश में समानदृष्टि से प्रजा का पालन करते हुए राज्य करने लगा ॥ ६८ ॥

नयरत सर्वत्र प्रख्यात महाराजा शिवाजी के भारतदेश में प्रजा पर शासन काल में सब जगह शान्ति थी, कहीं पर भी ६ प्रकार की जो ईतियां है उन का भय नहीं था । यह भारतभूमिखण्ड (उस समय) स्वर्ग के समान था ॥ ६९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काले ववर्ष जलदश्चलति स्म वायु-
र्मोदावहः सुखकरः समयानुकूलः ।
आसीच्च भारतमही धनधान्यपूर्णा
नीत्या प्रजां शिवनृपे परिशासतीति ॥७०॥

राज्ये विशिष्टपदमापुरतिप्रवीणा
विप्रा विशालहृदया नृपनीतिदक्षाः ।
दृष्टिः प्रजासु च शिवस्य समा सदासीद्
राज्ये प्रजा गतभया मुदिता बभूव ॥७१॥

हर्म्ये स्थिता परिनिरीक्ष्य तु सिंहदुर्गं
"जीजै"कदा स्वतनयं शिववीरमूचे ।
त्वं चासि मे यदि सुतो विजयस्व दुर्गं
नो चेत् शपामि शृणु रे न मृषा वदामि ॥७२॥

समय पर वर्षा होती थी, आनन्दप्रद, सुखकर समयानुकूल वायु चलती थी। समस्त भारतमही धनधान्यपूर्ण थी। जब कि शिवाजी महाराज प्रजा पर नीति से शासन करते थे ॥ ७० ॥

शिवाजी के राज्य में विशेषाधिकार पद राजनीतिकुशल उदारहृदय वेदज्ञ ब्राह्मणों को सोंपा जाता था। राजा की प्रजा पर समान दृष्टि थी। प्रजा निर्भय तथा मुदित रहती थी ॥ ७१ ॥

एकबार महल में बैठी हुई जीजाबाई ने सिंहलदुर्ग को देखकर अपने पुत्र शिवा से कहा। तू अगर मेरा पुत्र है तो सिंहल दुर्ग को जीत। नहीं तो तुझे शाप दूंगी। रे सुन मैं मिथ्या कभी नहीं बोलती ॥ ७२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा शिवः स्वजननीवचनानुरोधाद्
दुर्गं तु सिंहस्थ जेतुमियेश कामम् ।
"तानाजिनं" स्वसुहृदं निजकार्यसिद्धौ
दक्षं भटं भटवरं मनसा त्वमंस्त ॥७३॥

आहूतवान् स्वजननीवचनानुबद्ध-
स्तानाजिनं निजजनं शिवराजवीरः ।
दृष्ट्वागतं स्वसुहृदं प्रति चाचचक्षे
दुर्गं विजित्य निजगौरवमाशु रक्ष ॥७४॥

श्रुत्वा वचः स्वसुहृदः प्रणिपत्य मित्रं
तानाभटः समकरोत् सुदृढ़ां प्रतिज्ञाम् ।
यावज्जयो न भविता मम सिंहदुर्गे
तावद् गृहं प्रति पुनर्न निवर्तयिष्ये ॥७५॥

अपनी माता के वचनानुरोध से शिवाजी ने सिंहल दुर्ग को जीतने की इच्छा प्रगट की.- अपनी इस कार्यसिद्धि के लिए अपने परममित्र महान् योद्धा तानाजी को स्मरण किया ॥ ७३ ॥

फिर शिवाजी ने अपनी मां के आग्रह से अपने स्वजन (बन्धु) तानाजी को बुलाया और मित्र को आया देख अपने मित्र से बोले (हे मित्र) दुर्ग को जीत कर अपने गौरव की रक्षा करो ॥ ७४ ॥

तानाभट ने अपने मित्र (शिवाजी की) बात सुन और उन्हें प्रणाम कर यह दृढ़ प्रतिज्ञा की । जब तक मैं सिंहल दुर्ग को नहीं जीत लूंगा तब तक वापिस घर को नहीं लौटूंगा ॥ ७५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वा स सिंह इव गर्जनमार्यवीर-
आक्षोहिणीपरिवृतो विजयाय यातः ।
संप्राप्य शत्रुगणदुर्गमथो निशीथे
तानाभटो निजभटान् प्रति संबभाषे ॥७६॥

वीरोऽस्ति को मम भटेषु महान् सुयोद्धा
यः सिंहदुर्गमधिरुह्य सुसाहसेन ।
ज्ञात्वा ह्यरातिदलवृत्तमुदारवृत्त
आयात् स तूर्णमिति मे मनसो विचारः ॥७७॥

तानाज्ञया धृतसुसाहसकाः सुवीरा
दुर्गावरोहणविधौ सफला न भूताः ।
अन्ते स्वयं शिवसखा सहसाऽऽरुरोह
दुर्गं ह्यरातिगणजुष्टमहोऽत्यगम्यम् ॥७८॥

तानाजी सिंह की गर्जना कर बहुत सी सेना अक्षौहिणी समेत विजय के लिए चल पड़ा और आधीरात के समय शत्रु के दुर्ग पर पहुँच तानाजी अपने योद्धाओं से बोला ॥ ७६ ॥

मेरे योद्धाओं में कौन ऐसा वीर योद्धा है जो बड़े साहस से सिंहदुर्ग पर चढ़कर शत्रुदल का वृत्तान्त जानकर मेरे पास जल्दी आ जावे । ऐसा मेरा विचार है ॥७७॥

तानाजी की आज्ञा पर बड़े साहसिकयोद्धा दुर्ग पर चढने में सफल नहीं हुए । फिर स्वयं शिवाजी का परमसखा तानाजी शत्रुओं से सेवित अगम्य किले पर चढ गया ॥ ७८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेनैव सार्धमतिसाहसमेत्य वीरा-
स्तानाभटस्य सुभटा ह्यवरुह्य दुर्गम् ।
दुर्गस्थितानरबदेशभवाँस्त्वसख्यान्
जघ्नुः पशूनिव खलान् यवनान् बलिष्ठान् ॥७९॥

श्रुत्वाऽधिदुर्गमरिविप्लवजं तु घोषं
क्रुद्धो महानुदयभानुरतिप्रचण्डः ।
दक्षैर्भटैः परिवृतो बहुमांसभोजी
तानाभटेन सह योद्धुमथाऽऽजगाम ॥८०॥

सार्धं तु तेन सहसोपगतांश्च तस्य
पुत्रान् जघान तरसा ह्यसिना सुवीरः ।
"तानाभटो" भटवरो द्विरदाधिरूढः
संतापयन् युधि मनो द्विषतां दिदीपे ॥८१॥

तानाजी के साथ २ बड़ा साहस कर तानाजी के योद्धा भी किले पर चढ़ गए और वहां दुर्गस्थित अरबदेश के रहने वाले असंख्य वीर यवनयोद्धाओं को पशुओं की तरह मारा । ७९॥

महान् उदयभानु (जो हिन्दु होते हुए औरंगजेब से मिल गया था) शत्रुओं का दुर्गाधिरोहण व उनकी मारधाड़ घोष को सुन कर तानाभट के साथ युद्ध करने के लिए आ डटा ॥ ८० ॥

तानाजी ने उसके (उदयभानु के) साथ आए हुए पुत्रों को तलवार से मार दिया । तानाजी हाथी पर चढ़ा शत्रुओं के मन को तपाता हुआ बड़ा शोभित होरहा था ॥८१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञात्वा हतानुदयभानुरथो सुतान् स्वान्
धृत्वा करालपरिघं परिदीप्यमानम् ।
क्रुद्धो महाहिरिव मन्युमुपेत्य वेगात्
तानाभटं स्वपरिघेण जघान सद्यः ।।८२ ।

तानाभटे विनिहते परिवृद्धमन्यु-
स्तानाभटस्य खलु मातुल आर्यवृद्धः
आदाय खड्गमथ "सेलरजी" बलिष्ठ
उच्चैर्जगर्ज वनसिंह इवाऽतिदृप्तः ।८३ ।

रे दुष्ट! पामर! महाधम! नीच! पापिन्!
जाताऽधुना किमु मही सुभटैर्विहीना ।
उक्त्वेति "सेलरभटः" परिघेण सद्यः
कायादधो ह्युदयभानुशिरश्चकार ।।८४।।

फिर उदयभानु ने अपने हत हुए पुत्रों को जानकर बड़ी चमकती तलवार को लेकर क्रुद्ध सर्प की तरह बड़े वेग से झपटकर तानाभट को तेज तलवार का शिकार बना दिया ।।८२।।

ताना भट के मारे जानेपर ताना जी का मामा सेलर जी बड़ा क्रुद्ध हो रहा था। खड्ग लेकर वन के शेर की तरह गर्जने लगा ।।८३।।

रे दुष्ट पामर (नीच) महाधम ! क्या ताना जी के मरने पर पृथ्वी बहादुरों से खाली हो गई। यह कहकर तलवार से उदयभानु का सिर धड़ से अलग कर दिया ।।८४ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेनाधिपे ह्यु दयभानुभटे हते च
सेना हता दश दिशासु गताऽतिभीता ।
इत्थं शिवस्य सुभटैर्महता बलेन
दुर्गं विजित्य विजयस्य कृतोऽतिघोषः ॥८५॥

आगत्य तत्र शिवराजनृपोऽसिपाणि-
"स्तानाजिनं" समवलोक्य भटं हतं च ।
संतप्यमानहृदयः शिव इत्थमाह
सिंह प्रदाय खलु सिंहलदुर्ग माप ॥८६॥

जित्वा तु सिंहलसमान् बहुशः प्रसिद्धान्
दुर्गान् महाद्भुतभटः शिवराजवीरः ।
सर्वत्र तत्र विदधे निजराज्यसत्ता-
मार्यत्वसंस्कृतिमसौ सुतरां ररक्ष ॥८७॥

सेनापति उदयभानु के मर जाने पर हताश हुई यवन सेना दश दिशाओं में भाग गई । इस प्रकार शिवाजी के योद्धाओं ने किले को जीतकर विजय की घोषणा कर दी ॥८५॥

फिर वहां शिवाजी ने आकर ताना जी को मरा देखकर इस प्रकार कहा, अहो! हमने तो सिंह देकर सिंहल-दुर्ग को पाया ॥८६॥

परम योद्धा महाराज शिवाजी ने सिंहल दुर्ग के समान अनेक किले जीतकर सब जगह अपनी राज्य सत्ता स्थापित की और आर्य संस्कृति की रक्षा की ॥८७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वाधिकारमथ "सिंहलनामदुर्गे
वीरः शिवो भटवरो महता बलेन ।
जेतुं महत् सुनगरं "सुरतं" प्रसिद्धं
चैन्द्रीं श्रियं परिदधत् समुदः प्रतस्थे ॥८८॥

जित्वा समस्तनगरं सुविधाय सत्तां
स्वीयां निजेन भुजदण्डबलेन शैवः ।
मुग्लान् निहत्य च बहून् बहुमूल्यजाति
जग्राह रत्नमणिमौक्तिकभूषणानि ॥८९॥

ज्ञात्वेतिवृत्तमतिकोपधरोऽवरंगः
सज्जीचकार विजसैन्यदलेन सार्धम् ।
"दिल्लेरखान"मथ "खानमहावतं" वै
योद्धुं शिवेन सह दक्षिणदिग्विभागे ॥९०॥

फिर सिंहल दुर्ग पर अपना अधिकार करके वीर शिवाजी ने बड़ी सेना समेत प्रसिद्ध "सूरत" नगर पर (विजय के हेतु) चढ़ाई कर दी । जो नगर इन्द्र की लक्ष्मी की शोभा धारण कर रहा था ॥८८॥

समस्त सूरतनगर को अपने भुजदण्ड बल से जीतकर और वहां सारा अधिकार जमाकर मुगलों को मारकर अनेक मणि माणिक्य मोती आभूषणों को ले लिया ॥८९॥

फिर यह समस्त वृत्तान्त औरंगजेब के कर्णगोचर हो गया । राजा ने बड़ी भारी सेना के साथ शिवाजी के साथ लड़ने के लिये दक्षिण भारत में दिल्लेर खां महावत खां को भेजा ॥९०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युद्धं महत् सुतुमुलं समभूदरीणां
सालेरदुर्गमधि मुग्गलपेशवानाम् ।
वीरप्रताप-प्रियराव-सुमित्र-नीत्या
लेभे शिवः सुविजय विनिहत्य दस्यून् ॥६१ ।

सालेरदुर्गविजये मुगलास्त्वसंख्याः
सेनाधिपाश्च यवना निहता अभूवन् ।
बन्दीकृतास्त्वगणिता न हि चाश्वनागा-
नामनुमानमभवद् युधि संहतानाम् ॥६२॥

श्रीवीरसिंहशिवराजकृपाणभीत-
''औरंगजेब''नृपतिर्न जहौ स्वहर्म्यम् ।
रात्रिं दिवं त्वधिगृहं निवसँस्त्रसन् सः
खादन् पिबन्नपि चलंश्च ददर्श शैवम् ॥६३॥

शत्रुओं के साथ सालेर किले पर मुगलों व पेशवाओं का बड़ा तुमुल (भयंकर) युद्ध छिड़ा। वीर शिवाजी ने वीर प्रताप तथा प्रिय राव सुमित्र की नीति से विजय प्राप्त की। अनेक शत्रुओं को मौत के घाट उतारा ॥६१॥

सालेर दुर्ग की विजय में असंख्य मुगल मारे गए। अनेक यवन सेनापति मारे गए। घायल हुए लोगों की तो गिनती ही नहीं हो सकती ॥६२॥

सिंह रूप शिवाजी की कृपाण से भयभीत राजा औरंगजेब महल को नहीं छोड़ता था। दिन रात घर में रहता हुआ बड़ा व्याकुल था, खाता पीता चलता सामने (स्वप्नवत्) वीर शिवाजी को ही देखता था ॥६३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिल्लीपतिर्यवनराट् शिवराजभीत-
श्चान्ते शिवेन सह योद्धुमना न जातः ।
भूमिं शशास खलु दक्षिण भारतस्य
वीरः शिवोऽपरमही "अवरंगजेबः" ॥६४॥

राज्ञः शिवस्य शुभशासनकालमध्ये
जातो न कोऽपि पुरुषो विषयानुरागी ।
सर्वे जना निजनिजेप्सितकार्यसिद्धौ
सिद्धिं गता गतभया मुदिता बभूवुः ॥६५॥

वीरः शिवः शिवकलांशभवोऽरिवर्गं
जित्वाधिकृत्य बहुशोऽरिगणस्य दुर्गान् ।
गोब्राह्मणार्तिहरणाय सदोद्यतो हि
ख्यातिं परामधिगतो द्विजदेवभक्तः ॥६६॥

यवनराज औरंगजेब शिवाजी के साथ युद्ध करने के लिए स्थगित विचारवान् होगया । दक्षिण भारत भूमि पर शिवाजी राज्य करने लगा । शेष भारत भूमि पर औरंगजेब ॥६४॥

महाराज शिवाजी के शासनकाल में कोई विषयानुरागी नहीं था । सब प्रजा अपने २ कार्यों की सफलता में लगी हुई थी तथा निर्भय मुदित मन थी ॥६५॥

वीर शिवाजी शिव शङ्कर भगवान् का अंशावतार था वह शत्रुओं के दुर्गों पर अपना अधिकार जमा गौ ब्राह्मणों की पीड़ा दूर करने में सदा तैयार रहता था । देव द्विजभक्त था । संसार में परम प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ ॥६६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वा स्वतन्त्रमथ दक्षिणभारतं वै
संस्थाप्य चार्यकुलसंस्कृतिमार्यदेशे ।
सप्ताधिके सुदशके शतके तु षष्टि-
वर्षे शिवः शिवरतः शिवधाम यातः ॥६७॥

सीसौदियेति शुभवंशभवस्य राज्ञो
वीरस्य राजतिलकस्य शिवस्य गाथा ।
धीरेषु राजपुरुषेषु तनोति हर्षं
प्रेम्णाऽऽदृता हृदि धृता त्वधिदेवतेव ॥६८॥

यावद् दिवाकरनिशाकरयोः स्थितिः स्यात्
तावत्क्षितौ नृपशिवस्य यशस्ततं स्यात् ।
द्वित्रा हि सन्ति भुवि ते सुभटाश्च यैस्तु
स्वाहा कृतं निजबलं निजदेशहेतोः ॥६९॥

दक्षिण भारत को स्वतन्त्र कर आर्य देश में आर्य संस्कृति की स्थापना कर विक्रम संवत् १७६० में शिवाजी महाराज शिवभक्ति में रत शिवधाम में पहुंच गए ॥६७॥

सीसौदिया शुद्ध वंश में उत्पन्न वीर राजतिलक शिवा जी की चरित्र गाथा प्रेम से आदर की हुई अधिदेवता की तरह धीर वीर राजाओं में हर्ष उत्पन्न करती है ॥६८॥

जब तक सूर्य चन्द्रमा की स्थिति रहेगी तब तक वीर शिवाजी की कीर्ति पृथ्वी पर फैली रहेगी । संसार में थोड़े ही ऐसे वीर पुरुष हैं जिन्होंने अपने देश के लिए अपना जीवन बल स्वाहा कर दिया ॥ ६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"शम्भाजी"तनयः शिवस्य समभूज्ज्येष्ठः कनिष्ठः सुतो
राजाराम इति प्रशस्तगुणभाग् जातोऽनुरूपं पितुः ।
राजारामसुतः प्रशस्तविधिभिः सर्वोर्ध्वदेहिक्रियाः
संप्रेतस्य चकार दिव्यनगरे "रायेति" दुर्गे नवे ॥१००॥

श्रीमर्हट्टशिवस्य चारुचरितं युद्धादिगाथान्वितं
राज्ञां नीतिविदां कृतेऽस्ति सततं श्राव्यं सदा हर्षदम् ।
यद्गाथाश्रवणेन रोषभरितः सर्वार्यलोको मुदा
स्वान् प्राणानपि दातुमुत्सुकतरो वर्वर्त्यहो! चापदि ॥१०१॥

विद्यालङ्कारेति विशिष्टपदभाजा कविरत्नश्रीहजारीलाल-
शास्त्रिणा प्रणीते शिवप्रतापविरुदावली-
खण्डकाव्येशिवराज विजयनाम
द्वितीयशतकं समाप्तम् ।

शिवाजी का बड़ा पुत्र शम्भा जी था। छोटा पुत्र राजाराम था, जो पिता के अनुरूप था एवं गुणी था। राजाराम ने अपने पिता की सब और्ध्वदैहिक क्रियाएँ रायगढ़ के किले में सम्पन्न कीं ॥१००॥

श्री मरहटा महाराज शिवाजी का सुन्दर चरित्र युद्धादि कथाओं से ओत-प्रोत है। प्रस्तुत चरित्र नीतिज्ञ राजे महाराजाओं के लिए निरन्तर सुनने योग्य है। हर्षप्रद है। प्रस्तुत कथा सुनकर आर्य जन रोष में भरकर (धर्म के लिए) अपने प्राणों को भी न्यौछावर करने के लिए (आपत्ति काल में) तैयार हो जायेंगे।

शिवप्रतापविरुदावली का (लेखक के सुपुत्र) स्व० श्री भूमानन्द शास्त्री प्रभाकर बी० ए० कृत हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्यालङ्कारश्रीहजारीलालशास्त्रिणा निर्मितं

संस्कृतसाहित्यम्

१ पञ्चीकरणम् (सटीकम्)

२ कादम्बरीशतकम् (पद्यात्मकमद्भुतम्)

३ षड्दर्शनसिद्धान्तप्रक्रिया-अद्वैतवादश्च

४ संस्कृतमहाकविदिव्योपाख्यानम्

(राज्यसरकारद्वारा पुरस्कृतम्)

५ इन्दिराविजयप्रशस्तिशतकम् (संस्कृतपद्यात्मकमद्भुतम्)

६ शिवप्रतापविरुदावली (शतकद्वेयोपेता संस्कृतपद्यमयी)

७ वाशिष्ठधर्मसूत्रम् (सटीकम्)

८ हकीकतरायनाटकम्

९ महर्षिदयानन्दप्रशस्तिशतकम्

१० सगुणब्रह्मस्तुतिः

११ यजुर्वेदसन्ध्यामन्त्रव्याख्या

प्राप्तिस्थानम्

व्यवस्थापकः

संस्कृत विद्यालय

मु० पो० घिलावड़ छोटी

तहसील गोहाना

जि० सोनीपत (हरयाणा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

१- आत्मस्वरूप ब्रह्मचारी
व्यवस्थापक
लज्जाराम संस्कृत महाविद्यालय
पाण्डुपिण्डारा, जीन्द (हरयाणा)

२- व्यवस्थापक
संस्कृत विद्यालय
मु० पो० घिलावड़ (छोटी)
जि० सोनीपत (हरयाणा)

३- आचार्य प्रकाशन
दयानन्दमठ, रोहतक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवप्रतापविरुदावलीपुस्तकस्य
राष्ट्रभाषानुवादको मूलपुस्तकलेखकस्य सुपुत्रः
स्वर्गीयः श्री भूमानन्दशर्मा शास्त्री बी० ए०, प्रभाकरः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh